॥ओ३म्॥

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

● वर्ष : २४ ● अंक : २.३ ● फरवरी/मार्च २०२४

म.दयानन्द द्विजन्म शताब्दी- प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन - चित्रमय झलकियाँ

टंकारा में अन्तर्राष्ट्रीय म.दयानन्द २०० वा जन्मोत्सव

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के करकमलों से टंकारा में ज्ञानज्योति तीर्थस्थल का उद्‌घाटन।

आर्यजनों को राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का सम्बोधन।

महामहीम राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू का स्वागत करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२४ कलि संवत् ५१२४ विक्रम संवत् २०८०

दयानन्दाब्द १९९ माघ/फाल्गुन **फरवरी/मार्च २०२४**

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
राजेन्द्र दिवे	**डॉ.ब्रह्ममुनि**	**डॉ.नयनकुमार आचार्य**
(९८२२३६५२७२)		(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, ज्ञानकुमार आर्य, राजवीर शास्त्री, डॉ.अरुण चव्हाण**

लेख/समाचार भेजने हेतु – ई-मेल : nayankumaracharya222@gmail.com

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ०४
२) ऐ टंकारा की धरती..! (सम्पादकीयम्)................. ०५
३) म.दयानन्द द्विजन्मशताब्दी प्रान्तीय सम्मेलन......... ०८
४) टंकारा का दयानन्द २०० वा जन्मोत्सव २१
५) समाचार दर्पण २५
६) सभा के उपक्रम २८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी २९
२) असामान्य राजा छत्रपती शिवाजी ! ३०
३) आर्य समाजाच्या नियमांची मौलिकता............... ३६
४) वार्ताविशेष ३९
५) सन्यास दीक्षा व संकल्प मेळावा(सूचना)........... ४१
६) संस्कार व आर्यवीर दल शिबिर(सूचना)............ ४२

प्रकाशक

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय–आर्य समाज,
परली–वैजनाथ–४३१५१५

मुद्रक

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली–वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रू.१००/-

आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली–वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

मन की दिव्य शक्ति!

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

(ऋवेद-३४/२)

पदार्थान्वय– हे परमेश्वर वा विद्वन्! जब आपके सङ्ग से (**येन**) जिस (**अपसः**) सदा कर्म व धर्मनिष्ठ (**मनीषिणः**) मन का दमन करनेवाले, (**धीराः**) ध्यान करनेवाले बुद्धिमान लोग (**यज्ञे**) अग्निहोत्रादि वा धर्मसंयुक्त व्यवहार वा योगयज्ञ में और (**विदथेषु**) विज्ञान सम्बन्धी और युद्धादि व्यवहारों में (**कर्माणि**) अत्यन्त इष्ट कर्मों को (**कृण्वन्ति**) करते हैं। (**यत्**) जो (**अपूर्वम्**) सर्वोत्तम गुण, कर्म, स्वभाववाला (**प्रजानाम्**) प्राणिमात्र के (**अन्तः**) हृदय में (**यक्षम्**) पूजनीय वा संगत एकीभूत हो रहा है, (**तत्**) वह (**मे**) मेरा (**मनः**) मनन, विचार करना रुप मन (**शिवसङ्कल्पम्**) धर्मेष्ट (**अस्तु**) होवें।

भावार्थ–मनुष्यों को चाहिए कि परमेश्वर की उपासना, सुन्दर विचार, विद्या और सत्संग से अपने अन्तःकरण को अधर्माचरण से निवृत्त कर धर्म के आचरण में प्रवृत्त करें। **(म.दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य से साभार)**

।।ओ३म्।।

वैदिक सृष्टिनवसंवत्सर

(१,९६,०८,५३,१२५, कलि संवत् ५१२५) एवं

आर्य समाज के १४९ वे स्थापना दिवस पर

समस्त देशवासियों का शुभ अभिनंदन एवं

हार्दिक शुभकामनाएं..!

ऐ टंकारा की धरती, तुम्हें शत् शत् नमन!

भारतवर्ष...! वह धन्यधरा, जिसने अनादि काल से समग्र विश्व को वैदिक जीवनमूल्यों का पाठ पढ़ाया ! उसमें भी टंकारा की वह पुण्यभूमि, जिसने बुझती हुई वेद-ज्ञानज्योति को पुनः प्रज्वलित करने हेतु दयानन्द जैसा महान युगपुरुप इस संसार को दिया । आज से २०० वर्प पूर्व मूलशंकर के रूप में इस दिव्यात्मा का टंकारा में अवतरित होना फिर से सत्यज्ञान युग का शुभारम्भ रहा। हजारों वर्षों की वैचारिक गुलामी की बेडियों को तोड़नेवाला वह सच में एक दिव्यतम क्रांतिकारी समाजसुधारक था। अमेरिका के दार्शनिक डॉक्टर एंड्रयू जैक्सन डेविस ने जिस सर्वव्यापी व सर्व विद्वेप-भस्मकारी सत्यज्ञान व प्रेम की अग्नि के दर्शन कर उसे ईश्वरपुत्र दयानन्द के हृदय में प्रादुर्भूत व प्रज्वलित माना था, उस क्रांतदर्शी युगात्मा की जन्मप्रदात्री टंकारा भूमि कितनी महान होगी? माता अमृताबेन व पिता करसनजी तिवारी ने न जाने कितने जन्मों की तप:पूर्ण जीवनसाधना से इस लाडले को जन्म देकर मानवता का उद्धार व संसार का उपकार किया। टंकारा की पावन भूमि के साथ ही वे माता-पिता के कुल भी धन्य हो गए और उनका समग्र कुल भी!

ऐसे महान वेदोद्धारक ऋपिप्रवर को स्मरण व नमन करने हेतु इस धरती पर महर्पि दयानंद का जन्मोत्सव मनाना विशेप मायने रखता है। दि.१०,११,१२ फरवरी २०२४ को ऋपि की जन्मस्थली में अंतर्राष्ट्रीय स्तरपर आयोजित भव्य स्मरणोत्सव में सम्मिलित होनेवाला दयानंद का प्रत्येक अनुयायी सच में कृतार्थ हो गया। इस पावनभूमि पर कदम रखकर अनेकों ने स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया। टंकारा की उस पवित्र मिट्टी को सरमाथे लगाकर हर एक का रोम रोम पुलकित हो उठा।

तीर्थयात्रा के लिए रुढिवादी लोग न जाने कहां-कहां जाते हैं और अविद्या व अज्ञान के वशीभूत होकर कितनीही अधार्मिक क्रियाओं में संलिप्त होते हैं। लेकिन आर्यों का टंकारा में पहुंचना सही अर्थो में महातीर्थ से भी बढ़कर आत्मिक आनंद प्रदान करनेवाला सिद्ध होता है। द्विजन्मशताब्दी के अवसर पर टंकारा पहुंचनेवाले आर्यजन भाग्यशाली रहे, क्योंकि वहां के जिवापुर मोहल्ले में स्थित बालक मूलशंकर वह जन्मगृह

देख कर सबकी आंखें तृप्त हो गई। जिस घर व आंगन में दयालजी(मूलजी) खेले, कूदे, संस्कारित हुए तथा आरंभिक संस्कृत विद्या ग्रहण की, उस स्थान पर कुछ समय बीताने से जो आनन्दानुभूति हुई, वह निश्चय ही नव ऊर्जा का संचारित करनेवाली रही! बालक दयालजी (मुलजी)ने टंकारा की जिन गली, मोहल्ले व चौराहों पर अपने चरणकमल रखे थे, उस उस जगह पर कदम रखने से हम श्रद्धालु पथिकों का हृदय भर आया! रास्तों से चलते समय अंतःकरण अतिशय प्रमुदित हो उठा!

मूलशंकर आरम्भिक कुमारावस्था तक अपने गांव में रहे । कैसे बीतें होंगें उनके वे बाल्यसुलभ सुदिन? शिशु, बाल व कुमार इन तीन अवस्थाओं को बिताते समय उनकी मनोदशा कैसी रही होगी? उस समय उन्होंने क्या-क्या चिंतन किया होगा? आयु के १४ वे वर्ष में मूलशंकर को जहाँ बोध हुआ, उस ऐतिहासिक शिवमंदिर को तन्मयता से देखने का हमें सुअवसर भी प्राप्त हुआ। मंदिर का स्वरूप आज भी जैसा के वैसा है। शायद ऋषि की पुरानी निशानी अमिट रहे और वह ऐतिहासिक प्रेरणा का केन्द्र बनें, यही इसके पीछे आर्यजनों की मनीषा रही होगी । मंदिर में पूजा-अर्चना आदि कार्यकलाप आज भी उसी तरह चल रहे हैं। पौराणिक शिवभक्त पिंडी पर जल, पत्र, पुष्प आदि चढ़ाकर दर्शन करते हैं, तो बाहर से पधारे आर्यजन अपने गुरुदेव दयानंद के उस ऐतिहासिक प्रसंग को याद कर कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

डेमी नदी के तट पर स्थित वह शिवालय अब 'महर्षि दयानंद बोधरात्रि मंदिर' के नाम से जाना जाता है। आजकल वहां ४४ वर्षीय पुजारी श्री बलवंत गिरि परंपरागत पूजापाठ करता है और आने-जानेवाले दोनों प्रकार के भक्तों को यहां की जानकारी देता है। उसने बताया कि हमारे गिरि परिवार की सातवीं पीढ़ी से मंदिर की देखभाल व पूजा विधि करती है। सप्ताह में एक बार आर्यजन आकर हवन करते हैं । प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि उत्सव भी मनाया जाता है। इस मंदिर को छोड़कर अन्य भी सात-आठ शिवमंदिर भी है। हमने सोचा कि जिस मंदिर की घटना से सत्य शिव का बोध पाकर मूलशंकर (दयानंद) ने संसार में वैदिक क्रांति का शंखनाद किया, वह स्थान आज भी अपनी परंपरागत अविद्याजन्य अन्धविश्वासों को आगे बढ़ा रहा है। दुनिया जग रही है, लेकिन 'दीए तले अन्धेरा!' की कहावत

अभी भी यहां पर दृष्टिगोचर हो रही है । शिव पिंडी तो केवल निमित्त मात्र रही, वह तो जड़ता व अज्ञान का प्रतीक थी। मूल शंकर का शिव की पिंडी से विश्वास उड़ जाना, यह वह क्रांति थी, जो संसार का कल्याण (शिव) चाहती थी। हजारों वर्षों से चल रही जड़ता और भौतिकता को समाप्त करने का वह शुभारंभ था । भक्ति, उपासना, धर्म-कर्म तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में मची उथल-पुथल, धांधलियों व शोर बाजार को रोकने का साहसी कदम रहा। यदि टंकारा का यह बालक मंदिर में न जगता और उसकी अगाध तपोमय जीवन साधना न होती, तो संसार में वेदज्ञान की ज्योति ही नहीं जलती। दयानंद ने केवल एतद्देशीय पौराणिक रूढ़िवादिता को ही चुनौती नहीं दी, बल्कि संसार में फैले अन्य कुरानी, ईसाई, जैनी, बौद्धी आदि आदि संप्रदायों की भी पोल खुल गई। सत्य की खोज में भटक रही दुनिया को टंकारा के भूमिपुत्र ने जीने की राह बताई।

आज समग्र विश्व में उतनी ही तेज गति से पाखंड बढ रहा है। एक ओर मंदिरों की संख्या बढ़ रही है, तो दूसरी ओर अन्य संप्रदाय भी उतने ही कट्टर बनते नजर आ रहे हैं। विज्ञानसम्मत सत्य वैदिक सिद्धांतों को समझने में वह क्यों कर आगे पीछे देख रहा है? व्यावहारिक दृष्टि से अन्य बातों में सतर्क व जागृत रहनेवाला आज का पढ़ा लिखा इंसान धर्मकर्म के बारे में बिल्कुल सोया हुआ है। सुशिक्षित वर्ग आधुनिक शिक्षा व पाश्चात्य सभ्यता के घेरे में इतना फंस चुका है कि वह अपने प्राचीन पवित्र वैदिक सिद्धांतों जानने व समझने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं है ।

जिस ऋषिवर ने अविद्यान्धकार मिटाने व सत्य वैदिक सिद्धांतों की स्थापना के लिए अपने जीवन का प्रत्येक क्षण व्यतीत किया, उस दिव्यात्मा की द्विजन्मशताब्दी क्या यूं ही सभा, सम्मेलनों व महोत्सवों को मनाने तक ही सीमित रहेगी ? अब हमें अहर्निश एक कर वैदिक ज्ञानज्योति अत्यधिक तीव्र बनाकर संसार के कोने-कोने में पहुंचना है, ताकि धरती से अवैदिक विचारों का अंधेरा खत्म हो जाए।दयानंद की २०० वी जन्मजयंती पर जन्मस्थली टंकारा को साक्षी मानते हुए इस धरती को कृतज्ञतापूर्वक नमन कर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इस सपने को साकार करने हेतु हमें सोत्साह प्रतिज्ञाबद्ध होना है, जिससे हमारा जीवन आर्यमय होगा और सर्वत्र दयानन्द की जयजयकार होगी!

– डॉ.नयनकुमार आचार्य

म.दयानन्द द्विजन्मशताब्दी महोत्सव यशस्वी

अपूर्व उत्साह एवं चेतनादायी वातावरण में सफल रहा

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

अपूर्व उत्साह, नई उमंग एवं 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्‌घोप सर्वदूर पहुंचाने की दृढ प्रतिबद्धता आदि भावनाओं से ओतप्रोत महर्पि दयानन्द सरस्वती का राज्यस्तरीय 'द्विजन्मशताब्दी महोत्सव तथा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन' हाल ही में सुसम्पन्न हुआ। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य समाज परली के सहयोग से दि.२, ३, ४ फरवरी को श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में आयोजित इस त्रिदिवसीय समारोह में वेदपारायण यज्ञ, विभिन्न विपयों पर आधारित सम्मेलन सत्र, भव्य शोभायात्रा, सम्मान समारोह, पू.सोममुनिजी शताब्दी, गुरुकुल वार्पिकोत्सव आदि कार्यक्रमों का अन्तर्भाव रहा।

प्रस्तुत समारोह में आर्य जगत् के वैदिक विद्वान प्रा.श्री सोनेरावजी आचार्य, पं.प्रियदत्तजी शास्त्री, पं.राजवीरजी शास्त्री, वेदविदुपी आचार्या श्रीमती सविताजी आदियों ने विभिन्न विपयों पर मौलिक विचार रखे। आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के महामन्त्री श्री महेशजी वेलानी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा विदर्भ–म.प्रदेश के प्रधान श्री सत्यवीरजी शास्त्री ने भी आर्यों को सम्बोधित किया।

अन्तिम दिन मुख्य समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनयजी आर्य ने महर्पि दयानन्द की द्विजन्मशताब्दी को व्यापक रुप से मनाने का आग्रह करते हुए ऋपि की क्रान्तिकारी जीवनी व उनके विश्वकल्याणकारी मन्तव्यों को जन–जन तक पहुंचाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा– 'आज महर्पि के विचारों की सर्वाधिक आवश्यकता है। सम्प्रति हर तरह से स्वामीजी हमें प्रासंगिक नजर आते हैं। स्वराज्य, स्वदेशी, दलितोद्धार, नारी–उध्दार, संस्कृति उत्थान, राष्ट्रभापा हिन्दी प्रसार, गोहत्या प्रतिबन्ध, आत्मनिर्भरता आदि बातों में महर्पि दयानन्द ही सुधारशिरोमणि रहे हैं, तब क्यों न हम उनके अनुयायी व आर्य समाजी उनकी इन उपलब्धियों को जन–जन तक पहुंचने में सर्वस्वी आगे रहे? यह तो हर एक

आर्य की जिम्मेदारी है।'

इस समारोह में अन्य आर्य नेताओं व विद्वानों ने भी मार्गदर्शन किया। सभी श्रद्धानन्द गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के निमित्त इस गुरुकुल के विभिन्न क्षेत्र में कार्यरत यशस्वी स्नातकों का अभिनन्दन भी किया। साथ ही आर्य स्वाधीनता सेनानी, समाजसेवी, शिक्षाविद्, कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता आदियों का गौरव किया है। सौ वर्षीय तपस्वी साधु महात्मा पू.श्री सोममुनिजी का विशेष अभिनन्दन इस समारोह का मुख्य आकर्षण रहा। इस त्रिदिवसीय समारोह में लगभग एक हजार से अधिक आर्य नर-नारियों व युवाओं ने सम्मिलित होकर एक तरह से महर्षि के सपनों को साकार करने हेतु सदैव तत्पर रहने का संकल्प किया।

- श्रद्धा के साथ यज्ञ -

तीनों दिन प्रातः यज्ञशाला में आयोजित वेदपारायण यज्ञ में अनेकों यजमानों ने श्रद्धा के साथ आहुतियां प्रदान की। यज्ञ के ब्रह्मा पद को गुरुकुल के आचार्य श्री सत्येन्द्रजी ने विभूषित किया। यज्ञीय व्यवस्था का संचालन प्रा.डॉ.वीरेंद्रजी शास्त्री ने किया। इस त्रिवदिवसीय यज्ञ में श्री दिनेशजी वाधवानी(इचलकरंजी), श्री योगराज भारती (लातूर), श्री उमेशजी स्वामी (बार्शी), श्री मनोजजी काबरा, श्री महेश लाहोटी, सचिनजी सारडा, सचिनजी तोतला (सभी परली) आदियों ने सम्मिलित होकर भक्तिभाव से आहुंतिया दी। इस अवसर पर आचार्य श्री सत्येन्द्रजी ने कहा- 'मानव जीवन में यज्ञ का सर्वाधिक महत्त्व है। जो यज्ञ से नाता जोडेगा, वही जीवन में सुख-शांति एवं आनंद की अनुभूति लेगा।' यज्ञ के दौरान आचार्य श्री सोनेरावजी ने भी यजमानों तथा उपस्थित यज्ञप्रेमियों को मार्गदर्शन किया।

पहले दिन यज्ञ के पश्चात् ओम् ध्वज फहराकर त्रिदिवसीय समारोह का उद्घाटन सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी, तपस्वी व्यक्तित्व पू.श्री सोममुनिजी इनके शुभ करकमलों से हुआ। ध्वजस्थल पर प्रा.सोनेरावजी आचार्य ने प्रेरक उद्बोधन दिया। ध्वजगान आचार्या सविताजी एवं ब्रह्मचारिणियों ने किया।

- पहले दिन के कार्यक्रम -

१) म.दयानन्द जीवन प्रेरणा सम्मेलन

इस सम्मेलन की अध्यक्षता प्रान्तीय सभा के उपप्रधान श्री लखमसीभाई वेलानी ने की। सम्मेलन का विषय था '**द्विजन्मशताब्दी की सार्थकता एवं म.दयानन्द की प्रासंगिकता**' इस विषय पर मुख्य वक्ता

प्रा.श्री सोनेरावजी आचार्य ने आर्यों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा- 'सम्प्रति समग्र विश्व में नानाविध पाखण्डों एवं अंधविश्वासों ने पैर जमाये हैं। एक ओर आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति बडे पैमाने पर फैल रही है, तो दूसरी ओर देवी-देवताओं एवं धर्म के नाम पर पाखण्ड बढ रहा है। ऐसी परिस्थिति में महर्षि दयानन्द के विचारों की बहुत ही आवश्यकता है। हमारा द्विजन्मशताब्दी मनाना तभी सार्थक होगा, जब कि हम ऋषिवर दयानन्द के सिद्धान्तों को अच्छी तरह से समझें और उन्हें जीवन में अपनाते हुए उनका प्रचार करें।' इस अवसर पर वैदिक विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री ने भी सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा - 'आज २०० वर्षों के बाद भी कुरीतियाँ बहुत ही बढ रही हैं। पढा-लिखा इन्सान सत्य को ग्रहण करने में पीछे है। धन बहुत बढ रहा है, लेकिन मानवता समाप्त होते जा रही है। महर्षि दयानन्द के वैदिक विचारों को अपनाने से ही सारी समस्यायें मिट सकती हैं। मराठी आर्य विद्वान श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी ने अपना मन्तव्य देते हुए कहा- 'आज व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र नानाविध समस्याओं से घिरा है। नानाविध मत-मतांतर एवं संघटन स्वार्थ की दौड में हैं। ऐसे में वैदिक विचारधारा की बहुत ही आवश्यकता है।

सम्मेलन से पहले हैदराबाद से पधारी वैदिक विदुषी भजनोपदेशिका आचार्या सविताजी ने समधुर भजन प्रस्तुत किये। महर्षि दयानन्द के उपकारों का वर्णन करते हुए उन्होंने दयानन्द के विचारों की महती आवश्यकता जताई। उनका साथ गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने दिया। इस सम्मेलन का संचालन देगलूर के युवा आर्य कार्यकर्त्ता श्री कपिलजी महिंद्रकर ने किया।

२) आर्यवीर युवा सम्मेलन -

भोजनोपरान्त दोपहर 'आर्यवीर युवा सम्मेलन' सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता सभा के उपमंत्री श्री शंकररावजी बिराजदार ने की। इस वैदिक सम्मेलन में 'वैदिक संस्कारों से ही युवकों का निर्माण सही' इस विषय पर मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री महेशजी वेलानी, प्रा.श्री अर्जुनरावजी सोमवंशी एवं वैदिक विद्वान प्रा.श्री सोनेरावजी आचार्य ने मौलिक विचार रखें। श्री सोनेरावजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा- 'आर्य वीर दल यह युवाओं के शारीरिक बल एवं चरित्र निर्माण करनेवाली आर्य समाज की ईकाई है। आर्य समाज का शक्ति एवं

सामर्थ्यस्थल युवा है। यदि युवा वर्ग आर्य समाज के साथ जुडेगा, तो निश्चय ही नयी दिशा मिल सकती है। राष्ट्र के नवनिर्माण में आर्य युवाओं का योगदान अपेक्षित है।' इस अवसर पर धर्माबाद से पधारे पं.अनिल आर्य ने भी अपने विचार रखें। उन्होंने कहा- 'युवाओं को पद-प्रतिष्ठा एवं मान-सन्मान से दूर रहकर आर्य समाज के प्रचार क्षेत्र में उतरना चाहिए। समारोह का संचालन महाराष्ट्र आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री व्यंकटेशजी हालिंगे ने किया।

३) ब्रह्मचारियों के शारीरिक व्यायाम व बल प्रदर्शन -

सायंकालीन सत्र में श्रद्धानन्द गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में गुरुकुल में आचार्य श्री सत्येन्द्रजी विद्योपासक के सान्निध्य व निर्देशन में ब्रह्मचारियों का भव्य शारीरिक बलप्रदर्शन हुआ। इन छात्रों ने विविध प्रकार के व्यायाम, कवायत, योगासन तथा क्रीडा प्रकारों को प्रस्तुत कर श्रोताओं के मन को जीत लिया। अपूर्व अनुशासन के साथ नाना प्रकार की क्रीडा अभिव्यक्ति करते हुए सभी को रोमांचित किया। हैदराबाद से पधारी ब्रह्मचारिणियों ने भी योगासनों की प्रस्तुति कर दर्शकों को चकित किया। इस प्रदर्शनी का संचालन प्रा.वीरेंद्रजी शास्त्री, प्रा.अरुण चव्हाण, प्रा.डॉ.वीरश्री आर्या, श्री कृष्ण आर्य आदियों ने किया।

४) राष्ट्ररक्षा सम्मेलन -

प्रथम दिवस के अन्तिम रात्रकालीन सत्र में 'राष्ट्ररक्षा सम्मेलन' सम्पन्न हुआ। प्रान्तीय सभा के कोपाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मेलन का 'राष्ट्र के नवनिर्माण में आर्य समाज की भूमिका'(भूत-वर्तमान व भविष्य के संदर्भ में) यह विपय था। सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रुप में वैदिक विद्वान पं.श्री प्रियदत्तजी शास्त्री(हैदराबाद), पं.सत्यवीर शास्त्री(प्रधान, विदर्भ-म.प्र.आर्य प्रतिनिधि सभा), प्रा.श्री अर्जुनरावजी सोमवंशी (इतिहास अध्येता एवं उपमंत्री, प्रांतीय सभा) यह रहे। अपना अध्ययनपूर्ण वक्तव्य रखते हुए पं.प्रियदत्तजी ने कहा- 'राष्ट्र के विपय में महर्पि दयानन्द का चिन्तन सर्वोपरी है। स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभापा एवं स्वसंस्कृति का सर्वप्रथम उद्घोप करनेवाले ऋपि दयानन्द सही अर्थों में राष्ट्र के समाजोद्धारक रहे हैं। आज भी उनके राष्ट्रीय एवं सामाजिक विचारों का सम्मान होना आवश्यक है।' पं.सत्यवीरजी शास्त्री ने कहा-'महर्पि

की विचारधारा का मूलाधार वेद हैं। चाहे कोई भी राष्ट्र क्यों न हो, उसकी रक्षा के लिए महर्षि के वैदिक मन्तव्यों को अपनाना बहुत ही आवश्यक है। इन विचारों से ही सम्पूर्ण विश्व में शान्ति की स्थापना हो सकती है और सभी राष्ट्र एक दूसरे के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करने लगेंगें। प्रा.श्री अर्जुनराव सोमवंशी ने हैदराबाद स्वन्तन्त्रता संग्रामकालीन क्रांतिकारी घटनाओं का वर्णन किया। उन्होंने कहा- 'निजाम के अत्याचारों को नष्ट करने हेतु असंख्य आर्य क्रान्तिकारियों ने अपने जीवन का बलिदान दिया। यदि आर्य समाज न होता, तो शायद ही दक्षिण का हैदराबाद संस्थान स्वतन्त्र होता।' इस अवसर पर प्रा.डॉ.वीरेन्द्रजी शास्त्री ने राष्ट्रनिर्माण में आर्य क्रान्तिकारियों के त्याग व बलिदान का स्मरण कराया। परभणी के आर्य युवक श्री रोहित जगदाले ने हैदराबाद स्वतन्त्रता आन्दोलन के घटनाचक्रों का वर्णन कर आर्य समाज के मौलिक कार्यों को विशद किया।

-द्वितीय दिवस के कार्यक्रम -

१) ऐतिहासिक भव्य शोभा यात्रा -

दूसरे दिन प्रातः यज्ञोपरान्त परली शहर में आर्यों की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। अत्यन्त उत्साह भरे वातावरण में यह शोभायात्रा आर्य समाज, परली के प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया के अक्षता मंगल कार्यालय से शुरु हुई। गुरुकुल आश्रम में सम्मिलित आर्य नर-नारियों एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को निजी वाहनों से शोभायात्रा के आरम्भस्थल पर लाया गया। शहर के स्थानीय विद्यालयों के छात्र भी यथासमय अपने अध्यापकों के साथ पहुंच गये।

गायत्री मन्त्र एवं ईश्वरस्तुति प्रार्थना मन्त्रों के साथ प्रातः ९.१५ बजे आर्यों की यह शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। जिसमें आगे-आगे स्कूलों व गुरुकुल के छात्र और फिर पीछे-पीछे राज्य के कोने-कोने से पधारे विभिन्न आर्य समाजों के कार्यकर्त्ता, आर्य नर-नारी अपने अपने बॅनरों व ध्वजों के साथ बडे आनन्द व उल्हास से चल रहे थे। अनेकों आर्य बहनें व माताएं भी उतनी प्रसन्नता के साथ ऋषि के गीत गाती नजर आयी। केसरियां पगडी पहने नगर के डॉक्टर, सभा के पदाधिकारी व अन्य दयानंदप्रेमी नागरिकों ने भी इसमें सहभाग लिया। शोभायात्रा का विशेष आकर्षण रहा खुला जीपवाहन! इसमें वैदिक विद्वान पं.प्रियदत्तजी, प्रा.सोनेरावजी, पं.राजवीरजी व पं.सत्यवीरजी खडे थे।

उनके पीछे चल रहा 'भव्य रथ' चलता रहा, जिसमें आर्य जगत् के सन्यासी स्वामी निर्भयानन्दजी(उ.प्र.), डॉ.ब्रह्ममुनिजी, पू.सोममुनिजी, सभाप्रधान योगमुनिजी,विज्ञानमुनिजी आदि विराजमान थे। इस शोभायात्रा में आर्यजन अत्यधिक आनन्द के साथ झूमते हुए ऋपि दयानन्द व आर्य समाज के गौरव में गीत गा रहे थे। जिसमें सर्वश्री पं.प्रतापसिंहजी चौहान, श्री सुभापजी नानेकर, वैजनाथराव हालिंगे, प्रा.सोनेराव आचार्य आदियों का उत्साहपूर्वक सहभाग रहा। आर्य विदुपी सविता आचार्या, श्रीमती टावरी, श्रीमती संगीता बिर्लाजी आदि महिलाएं भी इसमें अग्रणी रही। हर चौराहें पर स्कूली छात्र-छात्राएं एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने योगासन, लाठकाठी, शस्त्रसंचालन व अन्य प्रदर्शन किये। जैसे-जैसे शोभायात्रा आगे बढती रही, स्थानीय व्यापारियों व आर्यजनों ने इसका स्वागत किया। डुबे पेट्रोल पंप के समीप जब शोभायात्रा पहुंची तब विद्वानों व संन्यासी-वानप्रस्थियों का काले परिवार की ओर महिलाओं ने स्वागत किया। अग्रवाल लॉज के समीप श्री बियाणी व श्री डाड परिवारों ने अभिनन्दन किया और मिठाई, पानी पैकेट वितरीत कर सेवाएं दी। स्टेशन रोड पर कावरे परिवार ने छत से फूलों की पंखुडियां बिखेरकर अभिनंदन किया तथा महिलाओं ने साधु-सन्यासियों व विद्वानों का आरती उतारकर स्वागत किया। मोंढा मार्केट में श्री प्रेमचंदजी, नन्दकिशोरजी एवं जुगलकिशोर लोहिया तथा समस्त लोहिया परिवार ने बिस्कूट,जलपैकेट वितरीत कर शोभायात्रियों का स्वागत किया और साधु-महात्माओं का औक्षण भी किया। रैली का वातावरण बहुत ही सुहावना नजर आ रहा था। परली शहर के असंख्य व्यापारियों ने रैली को देखकर हृदय से प्रसन्नता जाहीर की।

स्कूलों की छात्र-छात्राएं महर्पि दयानन्द के जयकारों से वातावरण गूंजायमान कर रहे थे। विशेपकर देगलूर (जि.नांदेड) के जनविकास विद्यालय के लगभग ७५ छात्र अपने अध्यापकों के साथ पधारे थे। संस्था के संचालक श्री गोपालजी नाईक भी इस रैली व समारोह में सम्मिलित हुए। सभी छात्रों के हाथों में ओ३म् के ध्वज व समाजजागृति के संदेशों से युक्त लघुबोर्ड दिखाई दे रहे थे। जिन स्कूलों ने शोभायात्रा में सहभाग लिया, उनमें भेल सेकण्डरी स्कूल, न्यू हायस्कूल, महर्पि कणाद विद्यालय, संस्कार प्राथमिक विद्यालय, जनविकास विद्यालय (देगलूर), श्रद्धानन्द गुरुकुल

आश्रम का समावेश था।

छत्रपती शिवाजी महाराज चौक, बस स्टेशन, रेल्वे स्टेशन, अग्रवाल लॉज, स्टेशन रोड, मोंढा मार्केट, राणी लक्ष्मीबाई टॉवर होते हुए यह विशाल रैली आर्य समाज पहुंच गयी। वहां आर्य जगत् के विद्वान् प्रा.सोनेरावजी आचार्य ने उपस्थितों को सम्बोधित किया और महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी कार्यों की याद दिलाई। इस अवसर पर आर्य समाज परली की ओर से भी आर्य नर-नारियों पर पुष्पवृष्टि कर अभिनन्दन कर सभी हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया गया।

२) महिला सम्मेलन में नारीशक्ति की आवाज बुलन्द :-

शोभायात्रा एवं भोजनोपरान्त दोपहर द्विजन्मशताब्दी समारोह स्थल- गुरुकुल के मुख्य पण्डाल में 'आर्य महिला सम्मेलन' सम्पन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता आर्य समाज, वारजे -पुणे की वरिष्ठ आर्य कार्यकर्त्री सौ.लीलावन्ती बेन वेलानी ने की। सम्मेलन की शुरुआत प्रभात कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के समधुर गीत से हुई। सम्मेलन की प्रस्तावना सभा के कन्या संस्कार विभाग प्रमुख सौ.लीलावती जगदाले ने रखी। सौ.रेखा आचार्या ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर सौ.मधुमती शिन्दे, सौ.डॉ.हर्षा भायेकर, सौ.डॉ.वीरश्री आर्या ने अपने ओजस्वी विचारों द्वारा समाज व राष्ट्र के नवनिर्माण में नारीशक्ति के महनीय योगदान का स्मरण कराया। इन सभी वक्त्रियों ने नारी जागरण में महर्षि दयानन्द के ऐतिहासिक अपूर्व उपकारों की चर्चा कर सम्प्रति समाज की बिगडती दशा में महिलाओं को आगे आने का आवाहन किया।

मुख्य वक्ता आचार्या सविता जी ने कहा कि वेदों में स्त्रीशक्ति का विभिन्न स्थलों पर वर्णन आता है। वैदिक काल में महिलाएं वेदविद्या में पारंगत थी। शस्त्रसंचालन में निपुण थी। विभिन्न कलाकौशल में स्त्रियां अग्रेसर रही है। अपनी अपार तपस्या, त्याग व समर्पण के बल पर नारी ने अपना स्थान सर्वोपरी रखा था। ऋग्वेद में नारी अपने हृदय के भाव व्यक्त करते हुए आत्मविश्वास पूर्वक कहती है -

"अहं केतुः, अहं मूर्धा,
अहम् उग्रा, विवाचनी!"

अर्थात् मै (नारी) ध्वजा समान विजेत्री हूं, मैं सभीं में उंचे स्थान पर हूं। मैं बल में अग्रणी और प्रवचनादि कला निपुण हूं।

३) गुरुकुल सम्मेलन :-

सायंकाल ४ बजे गुरुकुलीय शिक्षा एवं स्नातक सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता महाराष्ट्र सभा के उपप्रधान श्री प्रमोदकुमारजी तिवारी ने की। 'वैदिक शिक्षा प्रणाली का महत्त्व एवं स्नातकों का सामाजिक योगदान' इस विपय पर सर्वश्री प्रा.लक्ष्मीकान्तजी शास्त्री(सोन्नर), आचार्य श्री अविनाशजी(पुणे), पं.दयानन्द शास्त्री(परभणी), आचार्य सत्येन्द्रजी विद्योपासक(परली), पं.सत्यवीरजी शास्त्री(अमरावती) आदियों ने विचार रखे। इन सभी वक्ताओं ने अपने भापणों में आधुनिक बढती समस्याओं के समाधान हेतु गुरुकुलीय शिक्षापद्धति की आवश्यकता दोहराई। वर्तमान दूपित सहशिक्षा के कारण समाज में अनैतिकता उग्र रुप धारण कर रही है। अतः सभ्य व सदाचारी समाज के निर्माण हेतु प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के प्रचार व प्रसार पर सभी ने बल दिया। पं.श्री.सत्यवीरजी शास्त्री ने कहा- 'शरीर, मन व बुद्धि के विकास से परिपूर्ण स्नातक वर्ग हर क्षेत्र में आगे आ सकते है। इसके लिए स्नातकों में नवोत्साह व आत्मविश्वास की जरुरत है।

मुख्य वक्ता प्रा.श्री सोनेरावजी आचार्य ने गुरुकुलीय शिक्षा का महत्त्व बताते हुए कहा-'मानव के सर्वांगिण विकास में सबसे अधिक उपयुक्त गुरुकुलीय सुसंस्कार व शिक्षा ही है। गुरुकुल का पढा ब्रह्मचारी खाली बैठ नहीं सकता। वेद व संस्कृत के अध्ययन से जहां उसका ज्ञानात्मक विकास होता है, वहीं शारीरिक बल व आध्यात्मिक शक्ति के आधार पर वह समाज में सम्मानित भी होता है। आज ऐसे स्नातकों की समाज के नवनिर्माण हेतु बहुत ही आवश्यकता है।' उन्होंने कहा कि 'गुरुकुलीय स्नातकों ने अपने अपने कर्मस्थलों पर आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में योगदान देना चाहिए। वर्तमान की सामाजिक दैन्यावस्था व देश की बिगडती दशा को सुधारने का उत्तरदायित्व केवल गुरुकुल के स्नातकों पर ही है, जिसे निभाने का सुसंस्कल्प वे दयानन्द द्विजन्मशती के पुण्यावसर पर अवश्य करें।'

४) आर्य सिद्धान्त रक्षा सम्मेलन -

रात्रि में महाराष्ट्र सभा के मन्त्री श्री राजेन्द्रजी दिवे की अध्यक्षता में 'महर्पि दयानन्द सिद्धान्त रक्षा सम्मेलन' का आयोजन हुआ। इसमें मुख्य वक्ता के रुप में पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री जयसिंगरावजी गायकवाड पाटील व हैदराबाद से पधारे वैदिक विद्वान श्री

पं.प्रियदत्तजी शास्त्री उपस्थित थे। साथ ही सर्वश्री नारायणराव कुलकर्णी, पं.सत्यवीरजी शास्त्री ने अपने मन्तव्य रखे। आरम्भ में गुरुकुल ब्रह्मचारी चि.काशिनाथ, चि.प्रियांशु, चि.अमर व चि.अनुवेद इनके द्वारा भजन, भापण एवं श्लोकगायन की सुन्दर प्रस्तुति हुई। तत्पश्चात् उदगीर आर्य समाज के मन्त्री प्रा.डॉ.नरेन्द्रजी शिन्दे द्वारा सम्पादित 'चाणक्यसूत्रम्' इस ग्रन्थ का मान्यवरों के शुभ करकमलों से विमोचन हुआ।

नान्देड के आर्यलेखक श्री कुलकर्णीजी ने अपने लघुभापण में आर्यक्रान्तिकारियों के जीवन पर कुछ अंश प्रस्तुत किये। भाई श्यामलालजी का संस्मरण सुनाते हुए उन्होंने कहा – हैदराबाद के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाईजी का योगदान व बलिदान काफी रोमांचकारी व प्रेरणाप्रद रहा है। बीदर के जेल में वे अतिशय बिमार थे, ऐसी विपन्नावस्था में उनपर वैद्यकीय इलाज होना तो दूर उन्हें समुचित भोजन भी नही दिया। उन्हें जहर देकर मारा गया। भाईजी के इस बलिदान से देशभक्त आर्यों का क्रान्तिकारी आन्दोलन तीव्र हुआ।

पं.श्री सत्यवीरजी शास्त्री ने कहा–'म.दयानन्द की सिध्दान्त सर्वकालिक, सार्वजनिक व सार्वभौमिक हैं। हर एक आर्य को अपने पवित्र आचरण के माध्यम से इनमें दृढता लानी होगी।' पं.श्री प्रियदत्तजी शास्त्री ने अपने मौलिक वक्तव्य में कहा कि– 'स्वामी दयानन्दजी ने अपना कोई नया मत नहीं चलाया। सत्य की कसौटि पर आधारित अनादि वैदिक विचार ही उनके सिद्धान्त रहे हैं। अतः मानवमात्र एवं समग्र विश्व के सर्वकल्याण हेतु महर्पि के सिद्धान्त बहुत ही उपयुक्त सिद्ध होते हैं। सिद्धान्त तो परिपूर्ण है, लेकिन हम आर्यजन अपूर्ण है। परिस्थिति के अनुसार हम बदल रहे हैं और सत्य को छोडकर असत्य के साथ समझौता कर रहे हैं। इसीलिए आज की तुफानी दौड में पाखण्डवाद बढते जा रहा है। दयानन्द के अनुयायी यदि सत्य वैदिक विचारों पर दृढ रहेंगें, तो इनका प्रचार व प्रसार स्वयमेव सर्वदूर होता रहेगा।'

श्री गायकवाड का ओजस्वी भाषण

इस सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री जयसिंगराव गायकवाड पाटील ने कहा – 'देव दयानन्द ने अन्धःकार के वातावरण में वेदज्ञान का दीप जलाकर हमें प्रकाश से आलोकित किया है। देवी–देवताओं, धर्म व कर्मकाण्ड के नाम पर चल रहा पाखण्ड व अधर्म दयानन्द ने अपने अपने–अपार ज्ञानवैभव व

अलौकिक दिव्य व्यक्तित्व से समाप्त किया। जन्माधारित बनी जाति-पाति व सम्प्रदाय के बढते तूफानों को दयानन्द ने गुण-कर्मणा आधारेण वैदिक वर्णव्यवस्था का पथ दर्शाकर रोका और हर एक मानव को मानवीयता के पथ पर चलने हेतु प्रेरित किया। धरतीपर यदि दयानन्द न आते, तो सारी दुनिया पूर्व की भांति भ्रमित होकर व्यर्थ ही दुःखों के बोझ उठाती फिरती। आज दयानन्द के विचारों की सर्वाधिक आवश्यकता है। उनके वेदप्रतिपादित सत्यसिद्धान्त सम्प्रति बढते जा रहे भयंकर रोगों के लिए रामबाण औपधि है। इन्हीं सिद्धान्तों के आचरण से व्यक्ति, समाज, देश व समग्र संसार में फैले अज्ञान, अविद्या, अनाचार(भ्रष्टाचार), हिंसा, आतंकवाद आदि समस्याओं का अन्त होकर सर्वत्र शान्ति व सौहार्द का वातावरण स्थापित होगा।'

- अन्तिम दिन के कार्यक्रम -

-वेदपारायण यज्ञ की पूर्णाहुति -

गत दो दिनों से चल रहे वेदपारायण यज्ञ की पूर्णाहुति श्रद्धामयी वातावरण में सम्पन्न हुई। महर्षि याज्ञवल्क्य यज्ञशाला में सभी यजमान परिवारों ने भक्तिभाव से ओतप्रोत होकर यज्ञीय आहुतिंया प्रदान की। इस अवसर पर यज्ञा के ब्रह्मा आचार्य सत्येन्द्रजी ने कहा कि 'यज्ञ' वैदिक संस्कृति की आत्मा तथा हमारे जीवन का मूलाधार है। यज्ञीय भावना के विस्तार से हमारा जीवन सफल होगा। यदि शाश्वत सुख व आनन्द को पाना हो, तो शतपथ के 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।' इस मन्त्रांश का विस्तृत अर्थ आत्मसात करना चाहिए।

वैदिक विद्वान् प्रा.सोनेरावजी आचार्य ने अपने आध्यात्मिक प्रवचन में कहा - 'आज का मानव भौतिकता की चकाचौंध में सुख-शान्ति को खोजते हुए इधर-उधर भटक रहा है। लेकिन मृगतृष्णिका की भांति उसे कहीं पर भी सुख नजर नहीं आ रहा। जब तक वह धर्म, अध्यात्म व यज्ञ के साथ अपना नाता नहीं जोडेगा, तब तक ऐसे ही भटकता रहेगा।' इस अवसर पर यज्ञ संचालक डॉ.वीरेन्द्रजी शास्त्री ने सभी यजमानों का परिचय कराते हुए उनका स्वागत किया तथा सभी श्रद्धालुओं से गुरुकुल आश्रम के सहयोगी बनने का आवाहन किया। इस अवसर पर आचार्या सविताजी ने आध्यात्मिक भजन प्रस्तुत किये। सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी एवं पूज्य सोममुनिजी ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किये।

- मुख्य समारोह -

यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् मुख्य मंच से 'महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी महोत्सव' तथा 'प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन समारोह' शुरु हुआ। समारोह में शतायुप्राप्त तपस्वी व्यक्तित्व पू.सोममुनिजी गौरव, गुरुकुलीय वार्षिकोत्सव तथा सेवाव्रतियों के सम्मान आदि कार्यक्रमों का अन्तर्भाव रहा। समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज परली के प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया ने की। कार्यक्रम की शुरुआत पाणिनि प्रभात कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के सस्वर वेदपाठ से हुई। मुख्य वक्ता एवं मार्गदर्शक के रुप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामन्त्री श्री विनयजी आर्य उपस्थित रहे। मंच पर आमन्त्रित विद्वान्, आर्यनेतागण, सौ वर्षीय गौरवमूर्ति पू.सोममुनिजी, तपस्वी कर्मयोगी डॉ.ब्रह्ममुनिजी तथा अन्य महानुभाव भी विराजमान थे। साथ ही सभा के प्रधान योगमुनिजी, उपप्रधान दयारामजी बसैये, स्वा.सै.आनन्दमुनिजी, कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर तथा अन्य पदाधिकारी एवं संन्यासी, वानप्रस्थी आदियों की भी उपस्थिति रही।

– सम्मान व गौरव –

इस समारोह में सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय कार्यों में सक्रिय भूमिका निभानेवाले आर्य महानुभावों का तथा आमंत्रित विद्वानों, साधु-महात्माओं, गुरुकुलीय स्नातकों, प्रान्तीय द्विजन्मशताब्दी समारोह सफल कराने में पूर्ण सहयोग देनेवाले आर्य कार्यकर्त्ताओं का श्री विनयजी आर्य एवं अन्यों के करकमलों से सम्मान किया गया। सम्मानितों में स्वा.सै.पू.श्री आनन्दमुनिजी (चिल्लेअप्पा), प्राचार्य गोविन्दरावजी मैन्दरकर(आर्य लेखक), इंजि.श्रुतिशीलजी झंवर, मुम्बई में कार्यरत गुरुकुल के स्नातक श्री भूपेन्द्रजी शास्त्री, जयशीलजी मिजगर(आर्य), गुरुकुल के आचार्य सत्येन्द्रजी, रंगनाथजी तिवार, इंजि.श्री रावसाहेब पाटील(जलगांव) आदियों का समावेश है।

इसके पश्चात् गुरुकुल प्रसार, धर्मप्रचार व यज्ञीय प्रचारादि कार्यों के प्रसार में जीवन लगानेवाला वैराग्यमूर्ति, शतायुषी धर्मात्मा पू.श्री सोममुनिजी महाराज का उनके जन्मशताब्दी उपलक्ष्य में श्री विनयजी आर्य एवं अन्य महानुभावों के करकमलों से रु.५१ हजार की गौरवराशि, शौल, अभिनन्दनपत्र एवं पुष्पहार प्रदान कर विशेष सम्मान/गौरव किया गया। अभिनन्दन पत्र का वाचन प्रा.डॉ.अरुणजी चव्हाण ने किया। इस

अवसर पर श्री सोममुनिजी ने अपने गौरवमन्तव्य में सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर आर्यजनों को वैदिक धर्म प्रचार के लिए आगे आने का अनुरोध किया और अपने गौरव में प्राप्त धनराशि गुरुकुलीय कार्यों के लिए आर्य समाज परली को सौंप दी।

मुख्य वक्ता श्री विनयजी आर्य ने अपने सम्बोधन में ऋपिऋण को चुकाने के लिए आर्यों को सदैव जागृत रहने का आवाहन किया। उन्होंने कहा-महर्पि दयानन्द की वैदिक विचारधारा वर्तामन समय में सर्वाधिक प्रासंगिक बन गयी है। ऐसे समय में आर्यजनों को अपने आलस्य व अकर्मण्यता को दूर करते हुए उत्साहित होने की आवश्यकता है। महर्पि ने उस समय की नानाविध प्रतिकूलताओं के बावजूद अपने अपूर्व ज्ञान, साधना, पुरुपार्थ व तपस्या के माध्यम से समग्र मानवजाति में नवचेतना का संचार किया। समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों, रुढियों व अन्धविश्वासों को हटाने के लिए न जाने कितने प्रयास किये? सारी वसुधा को आर्यमय बनाने के लिए वे अहर्निश प्रयत्नरत रहें। अज्ञान, अविद्या व अभाव को जड से मिटाने और वैदिक ज्ञान से सभी को आलोकित करने हेतु उनका एक-एक क्षण बीता। आज हम सब उनके अनुयायी इतनी बडी संख्या में होते हुए भी उनके सपनों को साकार करने में क्यों पीछे हैं? अतः महर्पि की द्विजन्मशताब्दी मनाते समय अब हमें जागना होगा। महाराष्ट्र सभा ने इतना बडा आयोजन कर सही अर्थों में ऋपिवर की वैदिक ज्ञानज्योति को सर्वत्र प्रसारित करने का संकल्प किया है, इसलिए सभी पदाधिकारीगण तथा आयोजक कार्यकर्त्ता अभिनन्दन के पात्र हैं।

समारोह के अध्यक्षीय भापण में आर्य समाज परली के प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया ने म.दयानंद के महनीय जीवन व कार्यों को स्मरण कर आमन्त्रित सभी विद्वानों, आर्यनेताओं, साधु-महात्माओं का अभिनन्दन किया और उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित किये। इस अवसर पर गुरुकुल के स्नातक श्री जयशीलजी शास्त्री(मिजगर) जो कि मुम्बई फिल्म इंडस्ट्रीज में कार्यरत है, इन्होंने वेदप्रचार हेतु गुरुकुल को प्रचारवाहन प्रदान किया। जैसे यह प्रचार वाहन समारोह स्थल पर लाया गया। उपस्थित आर्यों ने इसका 'वैदिक जयघोप' के साथ तालियों से स्वागत किया। श्री विनयजी आर्य, पू.सोममुनिजी तथा अन्य वैदिक विद्वानों के करकमलों से मन्त्रोच्चारणपूर्वक इस वेदप्रचार वाहन

को आर्य समाज परली के पदाधिकारियों को सुपूर्द किया गया। बाद में दानदाता श्री जयशील सहित गुरुकुल के अन्य स्नातकों का श्री विनयजी ने सम्मान किया।

– विनयजी का विशेष सम्बोधन –

भोजनोपरान्त द्वितीय सत्र में श्री विनयजी आर्य ने 'म.द्विजन्मशताब्दी व हमारे कर्तव्य!' इस विषय पर आर्य कार्यकर्त्ताओं को विशेप सम्बोधित किया। उन्होंने कहा– 'हमारे आराध्य गुरुदेव स्वामी दयानन्द के मानवोपकारी कार्यों को जन-जन तक पहुंचाना हमारा उत्तरदायित्व है। उनके प्रेरक क्रान्तिकारी जीवन पर दृष्टिपात करेंगें, तो पता चलेगा कि उन्होंने कितने बडे अन्धःकारमय कालखण्ड में, चहुं ओर से अनगिनत प्रतिकूलताएं होते हुए भी अल्प समय में आश्चर्यकारक कार्य किया। तप और ज्ञान का सुन्दर समन्वय उनके जीवन में मिलता है। उन्होंने आजीवन सत्य वैदिक धर्म का ही प्रतिपादन किया। अनेकों प्रलोभन आये, लेकिन कभी भी असत्य से समझौता नहीं किया। उनकी अद्वितीय प्रेरक जीवनी को पढने से ज्ञात होता कि स्वामीजी का समग्र जीवन ईश्वरीय सत्य सिद्धान्तों के प्रतिपादन, वैदिक मानवता के प्रसार, अवैदिक मन्तव्यों को खण्डन व आर्य साम्राज्य की स्थापना हेतु व्यतीत हुआ। उनका अपने लिए कुछ भी नहीं था, सबकुछ था, तो वह केवल मानवजाति के सर्वहित के लिए ही!

महर्पि ने ऋपियों की ज्ञानधारा को प्रवाहित किया। दयानन्द ने होते, तो शिष्यपरम्परा भी खण्डित होती। उनके अमरग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखित भूमिका व तीनों अनुभूमिकाओं से पढने से पता चलता है कि उनके जीवन का लक्ष्य अखिल मानवजाति का सुधार करना व वैदिक विचारों को समग्र विश्व में फैलाना, यही एकमात्र था।

आज स्वामीजी के वैदिक विचारों को जन-जन-तक पहुंचाने के लिए हम सभी को कृतसंकल्पित होना है। इसके लिए आधुनिक समाज माध्यमों का उपयोग करना अत्यावश्यक होगा। इस अवसर उन्होंने टंकारा में विशाल स्तर आयोजित अन्तर्राष्ट्रिय दयानन्द द्विजन्मशताब्दी महासंमेलन में अधिकाधिक संख्या में पधारने का अनुरोध किया और समारोह के सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण जानकारियां दी। अन्त में सभा के मन्त्री श्री राजेन्द्रजी दिवे ने सभी को आभार प्रकट किया।

पावन भूमि टंकारा में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर
म.दयानन्द का २०० वां जन्मोत्सव सोत्साह

राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, राज्यपाल, मुख्यमन्त्री एवं आर्यनेताओं के उद्‌बोधन से आर्यों में नवचेतना!

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द का २०० वां जन्मोत्सव ऐतिहासिक पावन जन्मस्थली टंकारा (गुजरात) में अभूतपूर्व उत्साह के साथ मनाया गया। आर्यजगत् के अनेकों साधु-महात्माओं, सन्यासियों, वैदिक विद्वानों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं तथा महर्षि के अनुयायियों की चेतनायुक्त सहभागिता से टंकारा ग्राम का वातावरण पूरी तरह से दयानन्दमय बन गया। जिधर देखे उधर सर्वत्र महर्षि की ही जयजयकार सुनाई दे रही थी।

दि.१०, ११ व १२ फरवरी २०२४ को डी.ए.वी.कॉलेज, प्रबन्धकर्त्री समिति म.दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के संयुक्त तत्त्वावधान में टंकारा के मोरवी मार्ग पर पूर्व निर्धारित भव्य प्रांगण में यह समारोह विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सोत्साह सम्पन्न हुआ।

दि.१० फरवरी को प्रातः ९ बजे टंकारास्थित महर्षि दयानन्द जन्मगृह यज्ञ हुआ। तत्पश्चात् वहां से समारोह स्थल तक विशाल शोभायात्रा निकाली गयी। यह भव्य शोभायात्रा समारोह स्थल पर पहुचने पर वहां स्थापित यज्ञशाला में यज्ञ प्रज्वलित की, जिसमें प्रमुख यजमानों ने आहुतियां प्रदान की। तत्पश्चात् गुजरात राज्य के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी के करकमलों से ओ३म् ध्वजारोहण कर इस त्रिदिवसीय भव्य समारोह का उद्‌घाटन किया गया। तत्पश्चात् मुख्य मंच से कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा। जिनमें आर्यसन्यासी, विद्वानों व विचारविदों के ओजस्वी विचार सुनने मिले। दोपहर भजन संगीत व स्कूली छात्रों की लघुनाटिकाएं प्रस्तुति हुई।

दुसरे दिन दि.११ फरवरी को प्रातः १० बजे देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी का वर्च्युअल व्याख्यान हुआ। अपने प्रेरक उद्‌बोधन में श्री मोदीजी ने महर्षि दयानन्द के राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक

सुधारकार्यों में उनके द्वारा दिये महनीय योगदान को सश्रद्ध स्मरण किया। श्री मोदीजी ने कहा-''स्वामी दयानन्द केवल एक वैदिक ऋपि ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के महान ऋपि भी थे। उनसे प्रेरणा लेते हुए भारत देश अपने अमृतकाल में चहुंमुखी प्रगति कर रहा है। आगामी वर्प आर्य समाज की स्थापना का १५० वा वर्प है। मैं चाहूंगा कि हम सब इतने बडे अवसर को अपने प्रयासों, अपनी उपलब्धियों से सचमुच में यादगार बनायें।''

समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित गुजरात राज्य के राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रतजी का सारगर्भित भापण हुआ। विशिष्ट अतिथि के रुप में पधारे केन्द्रीय मन्त्री श्री पुरुपोत्तमजी रुपाला व अन्यों ने भी ऋपि दयाननन्दका स्मरण कर उनके ऐतिहासिक कार्यों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उसके पश्चात् दोपहर सांस्कृतिक कार्यक्रमान्तर्गत 'म.दयानन्द के कार्य-हमारी जिम्मेदारी' की प्रस्तुति हुई। इसी समारोह में महाराष्ट्र शतायु प्राप्त तपस्वी आर्य व्यक्तित्व पू.सोममुनिजी का अभिनन्दन किया गया। संयोजक श्री विनयजी आर्य ने सभागार को उनका परिचय कराकर सभी को प्रेरित किया। अपने लघुसम्बोधन में श्री सोममुनिजी आर्यों को जागृत होने की बात कहीं। उन्होंने कहा, 'महर्पि दयानन्द का सपना साकार करने हेतु, आर्यजनों को सोत्साह आगे आना चाहिए। यही तो समय की मांग हैं। इस अवसर श्री विनयजी आर्य ने देश की विभिन्न प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों का परिचय कराकर भिन्न भिन्न राज्यों में चल रही आर्य सामाजिक गतिविधियों की जानकारी को मंच पर महाराष्ट्र सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी, मंत्री श्री राजेन्द्रजी दिवे, आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री व्यंकटेशजी हालिंगे, कोपाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर आदि की भी उपस्थिति रही। महाराष्ट्र सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता डॉ.नयनकुमार आचार्य को भी अपना मन्तव्य प्रकट करने सौभाग्य प्राप्त हुआ। देश से आये विभिन्न कन्या-गुरुकुलों के ब्रह्मचारिणियों ने मधुर गीतों व नृत्यों की प्रस्तुति की। इसके पश्चात् योग गुरु स्वामी रामेदेवजी महाराज, आचार्य बालकृष्णजी तथा अन्य साधुओं को मुख्य सभा स्थलपर आगमन हुआ। अपने ओजपूर्ण भापण में श्री रामदेवजी कहा - मैं आज जो कुछ हूं, यह सब ऋपिवर देव दयानन्द के कारण ही ! ऐसे महर्पि देव दयानन्द ने समग्र विश्व

में धर्मध्वजा लहराई और वेदज्ञान की प्रतिष्ठा बढाई। इस समय उन्होंने 'अभी तो और सम्भलना है, ऋषि दयानन्द के सपनों को पूरा करना है' यह गीत भी उन्होंने प्रस्तुत किया।

सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम के अनतर्गत 'अन्धविश्वास-एक गहरी खाई' यह कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ। तत्पश्चात् शाम ७ बजे लगभग ११०० याज्ञिकों ने मिलकर 'सामूहिक यज्ञ' किया, जिससे समारोह स्थल पर स्वाहाकार की मंगलध्वनि गुंजायमान हुई। याज्ञिक लोग ऐसे बैठे थे, जिससे '२०० वां जन्मदिवस' इस लघुवाक्य एक रेखा में दिखाई दे रहा था। रात्रि में डीएवी स्कूलों के छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा एक नृत्यनाटिका प्रस्तुत हुई।

अन्तिम दिन दि.१२ फरवरी को प्रातः '२००वी दयानन्द जन्मजयन्ती महायज्ञ' सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात् स्मरण व संकल्प समारोह हुआ। प्रातः १०.३० बजे भारतवर्ष की महामहीम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के प्रमुख आतिथ्य में विशेष कार्यक्रम हुआ। राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रतजी, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल, केन्द्रीय मंत्री श्री पुरुषोत्तमजी रुपाला, डी.ए.वी. के प्रधान डॉ.पूनमजी सूरी आदियों ने राष्ट्रपति महोदया का स्वागत व अभिनन्दन किया।

इसी अवसर पर राष्ट्रपति द्वारा 'ज्ञानज्योति तीर्थ' का वर्चुअल शिलान्यास किया गया। अपने प्रमुख भाषण में राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने इस विशाल आयोजन पर समस्त आर्य संस्थाओं व कार्यकर्त्ताओं की भूरी-भूरी प्रशंसा की। उन्होंने कहा- 'स्वामी दयानन्द के समग्र मानव जाति पर अनन्त उपकार हैं। 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसा महान ग्रन्थ रचकर उन्होंने हम सभी को सत्यज्ञान के प्रकाश में लाया है। सामान्य लोगों को समझाने के लिए 'हिन्दी भाषा' का प्रयोग कर उसे 'राष्ट्रभाषा' का गौरव दिलाने विशेष भूमिका निभाई है। महर्षि दयानन्द ने अन्धविश्वासों, नानाविध अनिष्ट परम्पराओं को दूर करने हेतु काफी प्रयास किये। स्वामीजी के कारण ही आज नारी जाति को शिक्षा व सम्मान मिल रहा है।'' समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने यज्ञशाला में पहुंचकर पवित्र वेदमन्त्रों से श्रद्धापूर्वक आहुतियां भी प्रदान की। मंचीय संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनयजी आर्य, डॉ.विनयजी विद्यालंकार, डॉ.राजेन्द्र विद्यालंकार ने किया।

दोपहर भजनसंगीत प्रस्तुति के साथ ही इस सम्पूर्ण समारोह की सफलता हेतु अहर्निश कार्य करनेवाले आर्य कार्यकर्त्ताओं का सम्मान किया गया।

इस त्रिदिवसीय 'म.दयानन्द द्विजन्मशताब्दी स्मरणोत्सव समारोह' में चहुं तरफ आर्यजनों का अपूर्व उत्साह उमडता नजर आ रहा था। मनमोहक मुख्य प्रवेशद्वार सभी के लिए चित्ताकर्षक रहा। 'करशनजी का आँगन' इस नाम से बनें समारोह स्थल को बहुत ही कल्पकतापूर्वक ढंग से व विविध रंगीन मण्डपों तथा डेकोरेशन से सजाया गया था। म.दयानन्द की प्रेरक मूर्ति आर्यजनों को प्रेरित कर रही थी। साथ ही यज्ञशाला, पुस्तक विक्रयालय, मूवी हॉल, भावी योजनाओं की प्रदर्शनी, अलग-अलग मंच स्थल, बच्चों के लिए क्रीडा स्थल, शानदार रंगोली, युवाओं के व्यायाम प्रदर्शन, भोजन व्यवस्था आदि सब कुछ अतिशय सुन्दर, अनुपम एवं लाजवाब थे। समारोह में पधारनेवालों की टंकारा के विभिन्न स्थानों पर की गयी निवास व्यवस्था भी बढिया रही। इस भव्यतम जयन्त्युत्सव के आयोजकों, कार्यकर्त्ताओं तथा टंकारावासियों का हृदय से आभार एवं धन्यवाद...! * * *

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

-म.दयानन्द द्विजन्मशताब्दी प्रान्तीय महोत्सव-

धन्यवाद विज्ञप्ति

आदरणीय प्रिय सज्जनों एवं माता - बहनों, स्नेहपूर्वक नमस्ते ।

परली वैजनाथ में दि.२,३ व ४ फरवरी २०२४ को आयोजित 'महर्षि दयानंद द्विजन्मशताब्दी प्रान्तीय महोत्सव ' में पधारकर आपने कार्यक्रमों की शोभा बढ़ाई ! एतदर्थ आपका अभिनंदन ! आपके तन-मन-धन सहयोग से इस त्रिदिवसीय समारोह को हमने यथाशक्ति सफल बनाने का प्रयास किया है। फिर भी समारोह के नियोजन, आयोजन, भोजन, निवास, स्वागत - सम्मान आदि व्यवस्था में हमारी ओर से कुछ त्रुटियां रहे हो गई होगी। इससे आपकी असुविधा व दुःखानुभूति हुई होगी, इसलिए हम हृदय से क्षमाप्रार्थी हैं। आपके योग्य सुझावों से भविष्य में इसमें अवश्यमेव सुधार करने का प्रयास करेंगें। क्योंकि आप आर्यजनों का सहयोग ही तो हमारा सम्बल है। पुनश्च आभार..!

* भवदीय आभारोत्सुक *

सभी पदाधिकारी एवं सदस्य, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

आचार्य आर्य नरेशजी की नांदेड में वेदप्रचार यात्रा

आर्य जगत् के ओजस्वी विद्वान् आचार्य श्री आर्यनरेशजी ने हाल ही नान्देड (महाराष्ट्र) में वेदप्रचार यात्रा की। २८ फरवरी से मार्च २०२४ के दौरान आपने आर्य समाज नांदेड, आर्य समाज धर्माबाद, स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम परली-वै., ज्ञानेश्वर विद्यालय, तलणी ग्राम, योगकेन्द्र तरोडा खुर्द, हनुमान मन्दिर मोंढा मार्केट नान्देड आदि स्थानों पर उन्होंने अपने प्रभावशाली प्रवचनों से श्रोताओं को प्रेरित किया।

नाण्देड के आर्ययुवा कार्यकर्त्ता श्री ओ३म् ऋतुध्वज कदम, ओमकुमार कुरुडे, आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती गंगाबाई मारमपल्ले आदियों के सत्प्रयासों से इस वेदप्रचार यात्रा का आयोजन हुआ था। उपरोक्त विभिन्न स्थानों पर आचार्यजीने वैदिक आदर्श शिक्षाएं, मर्यादापुरुपोत्तम श्रीरामजी की पावन चरित्र, युगप्रवर्तक महर्पि दयानन्द के क्रान्तिकारी कार्य, आर्य समाज का महत्त्व, आर्यमय जीवनप्रणाली, गायत्री मन्त्र की व्याख्या, गोमाता की रक्षा, गुरुकुलीय शिक्षापद्धति की प्रासंगिकता, नरश्रेष्ठ वीर हनुमान के आदर्श आदि विपयों को प्रस्तुत किया।

भारतमाता की रक्षा और सम्पूर्ण विश्व में वैदिक विचारों को प्रचारित व प्रसारित करने के लिए हर एक आर्य को मनसा-वाचा-कर्मणा

विशुद्ध भाव से आगे आने का आवाहन उन्होंने किया। जब तक वैदिक संस्कृति, सभ्यता, मानवता एवं आर्योचित कर्मशीलता को अपनाया नहीं जाएगा, तब तक संसार शाश्वत सुख व शान्ति एवं आनन्द की स्थापना नहीं होगी, यह भी उन्होंने बताया।

गुरुकुलीय शिक्षा का प्रचार हो!

परली स्थित श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में पधारकर श्री आचार्यजी ने यहां पर चलनेवाली विभिन्न गतिविधियों को देखा और यहां के आर्यजनों को शुभाशीष दिया। यज्ञशाला में ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने वर्तमान युग की नानाविध समस्याओं को भयावह त्रासदी से बचने के लिए वैदिक शुभ संस्कारों, गुरुकुलीय शिक्षाव्यवस्था व सदाचारादि मूल्यों को अपनाने का अनुरोध किया। इस अवसर पर गुरुकुल के आचार्य श्री सत्येन्द्रजी, पू.सोममुनिजी, आर्य समाज के प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया, कोपाध्यक्ष श्री देविदासराव कावरे आदियों ने श्री आर्य नरेशजी का स्वागत किया। डॉ.श्री ब्रह्ममुनिजी से भेंट कर उनके स्वास्थ्य सुधार के लिए मंगल कामना की।

पिंपरी में 'आर्यवीर दल शिविर' सोत्साह

पुणे स्थित आर्य समाज पिम्परी के ७३ वे वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में दि.१२ से २२ दिसम्बर २०२३ तक विशालरुप में 'चरित्रनिर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर' उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर में छत्तीसगड से पधारे व्यायाम शिक्षक श्री रुपेन्द्र आर्य एवं कोल्हापुर के व्यायाम शिक्षक श्री ज्ञानेश पाटील ने प्रशिक्षण दिया। इस शिविर में पाँच विद्यालयों के छात्र प्रतिदिन दोनों समय सर्वांग सुंदर व्यायाम, योगासन, ज्युडो-कराटे आदि का प्रशिक्षण पाते रहे। शिविर के समापन समारोह में प्रमुख अतिथि के रुप में वैदिक विद्वान प्रा.सोनेरावजी आचार्य ने अपने ओजस्वी वाणी से बच्चों में उत्साह निर्माण किया। आर्य भजनोपदेशिका श्रीमती अंजली आर्या ने समधुर प्रेरक भजन प्रस्तुत कर छात्रों में नवचेतना जागृत की। महाराष्ट्र सभा के उपप्रधान श्री लखमसीभाई वेलानी जी ने समारोह की अध्यक्षता की। शिविर की सफलता हेतु प्रधान श्री सुरेन्द्रजी करमचन्दानी, उपप्रधान उत्तमजी दंडिमे, मंत्री हरेशजी त्रिलोकचन्दानी, उपमन्त्री दत्ता सूर्यवंशी व कमलेश धर्मानी, संजू भाट, रविंद्रजी भोसले, दिमेश यादव, दिगंबर रिद्दीवाडे, अतुल आचार्य आदियों ने प्रयत्न किये।

चार स्थानों पर संस्कार शिविरों का आयोजन

देश की नई पीढी को सुसंस्कारित करने तथा उनके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक उन्नयन हेतु महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दि.२१ से २७ अप्रैल तक बुधोडा(ता.औसा) के समीपस्थ वांगजेवाडी आश्रमशाला में तथा दि.२८ अप्रैल से ११ मई तक लातूर के सिद्धेश्वर मन्दिर परिसर में बालकों के लिए मानवता संस्कार एवं आर्य वीर दल शिविर होंगें! इसके साथ ही दि.८ से १४ मई को लातूर रेल्वे स्टेशन समीपस्थ नांदगाव के शारदा सदन आश्रम में एवं १२ से १९ मई को उदगीर शाहू सैनिकी विद्यालय-वसतीगृह में कन्याओं के लिए आर्य कन्या संस्कार व आर्य वीरांगना शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। अतः अभिभावक इन चारों शिविरों में अधिकाधिक बच्चे-बच्चियों को भेजें।

५ मई को लातूर में दो मुनियों की संन्यास दीक्षा व आर्य कार्यकर्त्ता जागृति संकल्प सम्मेलन

महाराष्ट्र सभा के तत्त्वावधान में आर्य समाज, गान्धी चौक लातूर के सहयोग से लातूर में ५ मई को शतायुप्राप्त तपस्वी वानप्रस्थी पू.श्री सोममुनिजी एवं आर्य समाजसेवी वैद्य पू.विज्ञानमुनिजी संन्यासाश्रम में दीक्षित हो रहे हैं। प्रातः ७.३० बजे यह संन्यास दीक्षाविधि होगी। तपस्वी आर्य समाजसेवक १०७ वर्षीय संन्यासी पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती इन्हें दीक्षा देकर संन्यासाश्रम में प्रविष्ट करायेंगें। तत्पश्चात् ९.०० बजे नवपरिव्राजकों का सम्मान व मन्तव्य तथा विद्वानों के भजन व प्रवचन होंगें।

दोपहर आर्यसमाज १५० वे स्थापना वर्ष के उलपक्ष्य में सभाद्वारा 'राज्यस्तरीय आर्य कार्यकर्त्ता जागृति संकल्प सम्मेलन' रखा गया हैं। इसमें आर्य कार्यकर्त्ताओं का नवनिर्माण, आर्य समाज के प्रचार व प्रसार की दिशानिर्धारण आदि विपयों पर आमंत्रित विद्वान सर्वश्री पं.आचार्य योगेन्द्रजी याज्ञिक, पं.अशोकजी आर्य, पं.प्रियदत्तजी शास्त्री, पं.राजवीरजी शास्त्री आदि मार्गदर्शन करेंगें। अतः इसमें अधिकाधिक आर्यजनों व युवाओं को सम्मिलित होने का आवाहन सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी, मंत्री श्री राजेन्द्रजी दिवे व अन्य पदाधिकारयों ने किया है।

|| कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ||

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एफ. ३३३/र.क्र.६/टी.इ. (७)९६७/१०४९.
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.व.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

।।ओ३म्।।

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* उपनिषद संदेश *

ईश्वरामध्ये अनंत बळ-ज्ञान-क्रिया !

न तस्य कार्य्यं करणं च विद्यते, न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च।।

(श्वताश्वेत उपनिषद-६/८)

भावार्थ - त्या महान परमेश्वरापासून कोणतेही तद्रूप कार्य(जसे मातीपाससून माठ) निष्पन्न होत नाही. तसेच सृष्टीच्या निर्मितीसाठी त्याला कोणत्याही साधनांची अपेक्षा नाही. त्याच्या बरोबरीचा कोणी नाही अथवा त्याच्याकडून अधिक मोठा कोणी नाही. त्याच्यामध्ये अनंत ज्ञान, अनंत बळ व अनंत क्रिया म्हणजेच सर्वोत्तम शक्ती स्वाभाविकपणे विद्यमान आहे.

* दयानंद वाणी *

'आर्य समाज' हाच तरणोपाय!

म्हणून या देशाची उन्नती व्हावी, असे तुम्हाला वाटत असेल, तर तुम्ही आर्य समाजाशी सहकार्य करुन त्याच्या उद्दिष्टानुसार आचरण करण्यास सुरुवात करा. नाही तर तुम्ही काहीही करु शकणार नाही. कारण तुम्ही व आम्ही मिळून देशोद्धाराचे काम केले पाहिजे.

ज्या देशातील पदार्थांनी तुमची-आमची शरीरे बनली आहेत, आज त्यांचे पालन पोषण होत आहे व यापुढे होणार आहे. त्यांची आपण सर्वजण मिळून तन-मन-धनाने व प्रेमाने उन्नती करू या! कारण आर्यावर्ताची उन्नती करण्यास आर्य समाज जसा समर्थ आहे, तसा दुसरा कोणताही समाज, संस्था अथवा संघटना असू शकत नाही. या समाजाला तुम्ही यथोचित साह्य कराल, तर ती फार चांगली गोष्ट होईल. कारण समाजाला भाग्यशाली बनविणे हे समुदायाचे काम असते. ते एकट्या-दुकट्याचे काम नसते.

सामान्यांचा 'असामान्य' राजा-'छत्रपती शिवाजी'!

- पं.रमेश ठाकुर

शिवाजी राजा! खरा राजा, खरे सरकार! सामान्यातून पुढे आलेला एक महान योद्धा! कोणाच्यातरी गादीवर वारसा हक्काने आलेला नाही. आयत्या बिळात नागोबा म्हणजे शिवाजी नव्हे. आपल्या किशोर वयात स्वतःचे राज्य असावे म्हणून विचार करणारे पोर म्हणजे शिवाजी! बालवयात मित्रांसोबत हुंदडणारा पोर स्वराज्याचे मनसुबे करतो; किती मोठे हे आश्चर्य? आपल्या सवंगड्यांना जमवले, आणि खेळ कोणते? लाठी, काठी, तलवार, दांडपट्टा आदी स्वतः प्रयत्नपूर्वक शिकायचे व मित्रांनाही ते शिकवायचे, असा तो शिवाजी! जिजामातेला देखील भारावल्यागत झाले ते पोर बाल शिवाजी; तोच राजा छत्रपती शिवराय! स्वराज्याचा खरा संस्थापक! आणि म्हणूनच हा सामान्यांना भावला; यानेच तर किशोरवयात तोरणा किल्ला जिंकून स्वराज्याचे पहिले तोरण बांधले.

'शिवाजी' हे नाव ऐकले की परिसरातल्या सामान्यांना तो आपला वाटायचा. जेथे आपलेपणा असतो, तेथे प्रत्येकाला आपल्या प्राणांचेही मोल वाटत नाही. त्यांना वाटते की आपण या शिवबासाठी जगावे, शिवबासाठीच मरावे. म्हणूनच शिवाजी राजा हा एक आगळा वेगळा राजा होता.

शिवाजी व स्त्रियांची स्थिती -

ज्या काळात शिवाजीचा जन्म झाला, तो काळ संरजामशाहीचा! स्त्रियांच्या अब्रुला किंमत नव्हती. गरीबांच्या तर नव्हतीच नव्हती. गोर-गरीबांच्या लेकी-सुना-बायका म्हणजे हवे तेंव्हा उपभोगण्याच्या वस्तू बनल्या होत्या. दिवसाढवळ्या त्यांची अब्रू लुटली जायची. दाद कुणाकडे मागणार? शिवाजीने स्वसामर्थ्यावर स्वराज्याचे तोरण बांधले. राजा शिवाजीच्या कानावर एके दिवशी एक बातमी धडकली. ती

वार्ता रांझ्याच्या एका मातब्बर पाटलाची होती! एकदा रांझ्याच्या पाटलाने एका गरीब शेतकऱ्याच्या तरुण मुलीला दिवसाढवळ्या सर्वांसमक्ष उचलून नेले व तिचा उपभोग घेतला. या अत्याचारी घटनेने त्या पिडीत मुलीचा बळी घेतला. सारा गाव हळहळला... पण पुढे? बाल शिवाजीला ही बातमी कळली. बाल शिवाजीने आपल्या सरदाराला आदेश दिला -'पकडून आणा त्या हरामखोराला!' मुसक्या बांधून त्या पाटलाला राजासमोर उभे करण्यात आले. राजे पुण्यात होते. राजाने पुन्हा हुकूम सोडला - 'हातपाय कलम करा त्याचे!' आणि रांझ्याच्या त्या पाटलाचे हातपाय तत्क्षणीच कलम करण्यात आले. ही बातमी खेडोपाडी पसरली आणि प्रत्येक आयाबहिणींना शिवाजी राजाचा आधार वाटू लागला. शिवाजी राजा सर्वांना आपला राजा वाटू लागला. आजकाल रोज बातम्या कानावर येतात, दूरचित्रवाणीवर दाखवलेही जाते- अत्याचार, बलात्कार! शिवाजीचा वारसा सांगणारे, उठल्या-सुटल्या शिवाजीचा जयघोप करणारे आणि आमचे सरकारही काय करताहेत? त्या माता-भगिनींच्या तक्रारीची नोंद घ्यायलाही कुणी तयार होत नाही. रयतेच्या मनात या नेत्यांबद्दल, या सरकारबद्दल आपलेपणा कसा वाटेल? कोरडा जयघोप कोणत्या कामाचा?

शिवाजी राजाचा इतिहासच विलक्षण आहे. त्यांच्या जीवनातील प्रत्येक प्रसंग अंगावर शहारे आणणारे तर आहेतच, पण राजाबद्दल ममत्व, आपला म्हणावा असे आहेत. लढाईसाठी बाहेर पडणारी फौज बेगुमान असायची. उभ्या पिकाची नासाडी करीत पिकातून जायचे. शिवाजी राजा हा कष्टकऱ्यांचा, शेतकऱ्यांचा राजा होता. त्याने आपल्या सैन्याला आदेश दिला - 'कोणत्याही मोहिमेवर जाताना शेतकऱ्यांच्या उभ्या पिकातून मुळीच जायचे नाही. पिकाची नासाडी करायची नाही. रयतेच्या भाजीच्या देठालाही हात लावता कामा नये. घोड्याला लागणारी वैरण रोख रक्कम देऊन खरेदी करायची.'

शिवाजी राजा सारखा राजा आता होणे नाही. शिवाजी राजाच्या काळातील सामान्य शेतकरी, त्यांची मुले यांना शिवाजी राजा आपला वाटायचा. याचे चांगले उदाहरण पुढील एका प्रसंगावरुन लक्षात येईल. एका शेतकऱ्याचा मुलगा शेताच्या बांधावर उभा आहे. शेतात पीक आहे. समोरुन काही सैनिक (घोडेस्वार) येत होते.

त्यांना अडवीत तो बालक गरजला – 'खबरदार जर टाच मारुनि याल पुढे चिंधड्या उडवीन राई-राई एवढ्या!'

दहा-बारा वर्षाचा युवक आणि त्याची हिम्मत! तो युवक शस्त्रसज्ज घोडेस्वारास म्हणतो आहे – "खबरदार! पुढे आलात तर तुमच्या चिंधड्या उडवीन." बेडरपणे केलेले हे बोल आणि तो ऐकणारा घोडेस्वार साक्षात शिवाजी राजे! राजे घोड्यावरुन उतरले आणि त्या पोराला कवटाळले, मिठी मारली. त्या मुलाने शिवाजी राजांना यापूर्वी पाहिलेही नव्हते. हे आहे रयतेचे खरे प्रेम, खरी माया, खरे आपलेपण! शिवाजी राजाचे वेगळेपण होते ते हे. कोणतेही प्रलोभन नसताना प्रजेने राजावर केलेले खरे निर्व्याज प्रेम! आणि आज? आज तर आमचे नेते प्रलोभनाच्या लालसेपोटी, पळापळ करीत आहेत. कुठेही, कोणावरही निष्ठा नाही. निष्ठा आहे पैशांवर! निष्ठा आहे पदांवर! हे चित्र रोज पाहावयास मिळत आहे. आमचे सरकार देखील बहुसंख्येसाठी अशा लालची लोकांना जवळ करीत आहे. तेही स्वतःचे संख्याबळ वाढवण्यासाठी! कुठेही ना शासनावर प्रेम आहे, ना देशावर! प्रेम आहे ते पदांवर व पैशांवर! म्हणून म्हणावेसे वाटते, 'शिवाजीसारखा राजा आता होणे नाही.'

इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे आपल्या एका पुस्तकाच्या प्रस्तावनेत लिहितात-"हिन्दुस्थानात जी देशी आणि परदेशी सरकारे होऊन गेली, ती सर्व एक प्रकारच्या पोटभरु चोरांची झाली. सरकार म्हणजे उपटसुंभ चोरांची टोळी आहे." राजवाडेंचे हे विधान आजच्या परिस्थितीला जसेच्या तसे लागू पडते.

भारतातील लढाया व राजे याबद्दल 'कार्ल मार्क्स एका पत्रात लिहितो- 'जरी काही वेळेला खेड्यांनाच युद्ध दुष्काळ, साथी यांनी धोका पोहोंचला, तरी तेच नाव, त्याच सरहद्दी, तेच हितसंबंध आणि तीच कुटुंबे शतकानुशतके सातत्य टिकवून आहेत. राज्ये मोडणे अगर दुभंगणे यांची झळ हे रहिवासी स्वतःला कधीच लावून घेत नाहीत. जोपर्यंत अखंड राहते, तोवर ते राज्य कुठल्या सत्तेकडे गेले किंवा कुठल्या सर्वाभौमत्वाखाली येते, याची फिकीर ते करीत नाहीत. त्यांची अंतर्गत व्यवस्थाही बदलत नाही.' शिवाजीराजे यांपेक्षा वेगळे होते. त्यावेळी ते राजे असले तरी त्यांकडे खरी लोकशाही होती. आज नावाला लोकशाही आहे.

सत्य समोर आणणाऱ्या पत्रकाराला घेरले जाते, त्यांच्या गाडीच्या काचा फोडल्या जातात, त्यांनी व्यासपीठावरुन सत्य बोलू नये, म्हणून अडवले जाते. हे आजचे ताजे उदाहरण आहे.

राजा शिवाजीच्या कोणकोणत्या पैलूंवर लिहावे? प्रत्येक प्रसंग अंगावर शहारे आणणारा आहे. कठीण समयी जनता पळून जाणारी नव्हती, तर समोर दिसत असलेल्या साक्षात मृत्यूला कवटाळणारी होती. 'मी मेलो तरी चालेल, पण माझा राजा वाचला पाहिजे.' पुढील प्रसंग पाहा, म्हणजे कळेल.

शिवाजी राजे आपल्या मावळ्यांसह पन्हाळगडावर होते. सिद्दी जोहरने पन्हाळगडास वेढा दिलेला. मदतीला फाजलखानही होता. त्यांच्यासोबत प्रचंड सेना होती. मुंगीलाही वाट मिळू नये, इतका दाट वेढा, अशा वेढ्यातून बाहेर पडणेच अवघड! दिवसांमागून दिवस जात होते. किल्ल्यावरची रसद संपत आली होती. यातून सुटका करुन घेण्याशिवाय दुसरा मार्गच नव्हता. पण वेढा असा दाट! काय करावे, कशी सुटका करुन घ्यावी? हा राजासमोर सुद्धा अवघड प्रश्न होता. सुटकेचा मार्गच दिसत नव्हता. त्यातल्या त्यात एखादी बारीकशी सांद सापडते का? याचा शोध घेतला जात होता. त्यातून गुपचुप निसटणे एवढाच पर्याय होता. येथून निसटून जावे व विशाळगड गाठावे. शिवाजी राजे आणि त्यांच्या सरदारांनी बाहेर पडण्याचा निर्धार केला. पण सुखरुप कसे बाहेर पडणार? सुगावा लागला तर किमान शिवाजी राजा तरी वाचला पाहिजे. एकच पर्याय होता. तो म्हणजे खोटा शिवाजी तयार करणे. पण कोणाला सांगणार शिवाजी बनण्यासाठी? साक्षात मरण पत्करण्यासाठी शिवाजी व्हावयाचे होते. न सांगताच एक तरुण पुढे आला. तो हुबेहुब शिवाजीसारखाच दिसायचा. केवढे हे धाडस! प्रत्यक्ष मृत्यू समोर दिसत असतांनाही हा तरुण पुढे सरसावला. हा युवक होता 'शिवा न्हावी.'

पालखी तयार करण्यात आली. हा नकली शिवाजी पालखीत त्याच ऐटीत बसला. तो स्वतःला धन्य समजू लागला. पालखी रवाना झाली. शिवाजी मोजक्या मावळ्यांसकट निसटले. इकडे शिवाजी समजून पालखी अडवली; तो शिवाजी राजासारखाच दिसत होता. जणू काही प्रति-शिवाजीच! तोच बाणा, तसेच बोलणे! सिद्दी जोहर व त्याचे साथीदार हे ओळख पटेपर्यंत गाफील राहिले. तितक्याच शिताफीने राजे निसटले.

आपण पकडलेला शिवाजी हा नकली असल्याचे कळले. एक सामान्य गरीब शिवा न्हावी! आपण पकडले जाणार व त्याच क्षणी मारले जाणार! हे त्याला माहीत होते. तरीही तो तयार झाला होता. व्हायचे तेच झाले. शत्रुकडून त्याचा खातमा करण्यात आला. त्याने हसत-हसत मृत्यूला कवटाळले; आपल्या राजाला वाचवले. कोणाच्या जहागिरीसाठी नव्हे, तर आपल्या शिवबांसाठी!

शिवाजी राजासाठी मरण पत्करायला अनेकजण तयार होते, अनेकांनी प्रत्यक्ष मृत्युला कवटाळले.

पन्हाळगडच्या या दाट विळख्यातून शिवाजी निसटले, हे सिद्दी जोहरच्या लक्षात आले. त्याने लागलीच आपल्या सैन्यासह विशाळगडाकडे कूच केली. शिवाजी राजे मोजक्या सैन्यानिशी विशाळगडाजवळ आले एका खिंडीजवळ..! राजे पुढे सरकेनात. तेथेही एकाने राजांना मोजक्या मावळ्यांसह विशाळ गडाकडे खिंडीतून पुढे जाण्यासाठी आग्रह धरला व पुढे पाठवले. आपल्या दोन्ही हातात तलवारी घेऊन अगदी थोड्याशा मावळ्यांसह शत्रुला खिंडीत अडविण्यासाठी उभे राहिले. थोड्या वेळातच सिद्दी जोहर व त्याचे सैनिक तेथे पोहोंचले. घनघोर युद्धास सुरुवात झाली. शत्रुसैन्यास पुढे जाण्याची संधी मिळेना. एकटा युवक शर्थीने सामना करीत होता. यात अनेकांना प्राण गमवावे लागले. तेथे तसूभरही शत्रूस पुढे जाऊ न देणारा योद्धा होता - बाजीप्रभू देशपांडे! हा वीर शर्थीने लढत होता. एकटा किती वेळ तोंड देणार? शेवटी बाजीलाही वर्मी घाव लागला. पण सारे प्राण एकवटून राजे किल्ल्यावर पोहोंचल्याबद्दलच्या तोफेच्या आवाजाची वाट पाहत होता. तोफा धडाडल्याचा आवाज आला. बाजी प्रभूने मृत्युला कवटाळले. हा दुसरा मोहरा शिवाजी राजांसाठी प्रार्णार्पण करणारा. या खिंडीत अनेकांनी आपले प्राणार्पण केले. पण इतिहासाला त्यांची नावे आजही कळलेली नाहीत. या सर्वांची प्राणाहुती होती, ती राजा शिवाजीसाठी! शिवाजी वाचला पाहिजे, कशासाठी? तर स्वराज्यासाठी!

किती जणांची नावे सांगावीत? शिवाजी राजाने अवघड प्रसंग स्वतःवर घेतले आहेत. राक्षसी कायेच्या अफजलखानास नको म्हणत असतानाही एकटे भेटावयास गेले. येथेही मृत्यू साक्षात पुढ्यात दिसत होता. पण राजे सावधगिरी पाळूनच अफजलखानास भेटले.

अफजलखान आपल्या मिठीत कवटाळून शिवाजीस संपवण्याच्या विचारात होता. पण शिवाजीने बाजी मारली. खानाचाच कोथळा बाहेर काढून त्याला संपवले. मात्र शिवाजीस संपवण्यासाठी पुढ्यात असलेल्या सय्यद बंडाची शिवाजीवर वार करण्यासाठी समशेर सरसावली. पण त्याचे समशेराचे हातच वरच्यावर छाटले ते जिवा महाला याने. आणि शेवटी शिवाजी राजे वाचले. म्हणूनच म्हटले जाते - 'होता जिवा म्हणून वाचला शिवा!'

शिवाजीराजे मुसलमानांच्या विरोधात होते, असा एक गैरसमज समाजात पसरवण्याचा प्रयत्न केला जातो. पण हे खरे नाही. शिवाजी हे फक्त अन्यायाविरुद्ध लढणारे राजे होते. धार्मिक सहिष्णुता या राजात पाहावयास मिळते. शिवाजीच्या पदरी अनेक मुसलमान सरदार व वतनदार होते. तेही मोठ्या हुद्यांवर आणि जबाबदारीच्या जागांवर! शिवाजींच्या तोफखान्याचा प्रमुख एक मुसलमान होता, इब्राहिम खान! सागर किनारे व परिसराच्या रक्षणासाठी जे आरमार होते, त्यांचा प्रमुख देखील मुसलमान सरदार -दौलतखान हा होता. शिवाजीच्या खास अंगरक्षकात विश्वासू म्हणून मदारी म्हेतर हा सुद्धा मुसलमानच होता. सिद्दी हिलाल हा असाच आणखी एक मुसलमान सरदार शिवाजीकडे होता. हा १६६० मध्ये शिवाजीच्या बाजूने लढला. सिद्दी हिलालचा मुलगा हा नेताजीबरोबर चकमकीत जखमी व कैदी झाला होता.

शिवाजी राजा हा सामान्यातल्या सामान्यांचा खरा असामान्य राजा होता. शिवाजीराजांमध्ये जात्यंधता यत्किंचितही नव्हती. आपल्या राज्याला आर्थिक बळकटी आणण्यासाठी त्यांनी सुरतेवर हल्ला केला व लूट केली. राजे सुरतेत लुटीसाठी निघाले तेंव्हा त्यांना रस्त्यावर कुराण शरीफची काही पाने पडलेली दिसली. राजे घोड्यावरुन उतरले. त्यांनी ती पाने उचलली. ती स्वच्छ केली व सेवकांना सांगितले की ही इस्लाम धर्मग्रंथाची पवित्र पाने आहेत, ती सुरक्षितपणे मशिदीत पोहोचवा. असे होते राजे शिवाजी! यासाठी एकच शब्द ओठी येतात- 'असा राजा होणे नाही.'

अशा या राजांना त्यांच्या जयंती दिनानिमित्ताने कोटी-कोटी प्रणाम!

- गारखेडा परिसर,
छत्रपती संभाजी नगर
मो.९४२३१७८८०३

आर्य समाजाच्या नियमांची मौलिकता

- डॉ.प्रकाश कच्छवा

महर्षी दयानंद सरस्वतींनी मुंबई येथील गिरगाव भागातील काकडवाडी येथे ७ एप्रिल १८७५ रोजी आर्य समाजाची स्थापना केली. त्यावेळी स्वामीजींनी आयर्न समाजाचे २८ नियम बनविले. त्यानंतर लाहोर येथे या नियमांना संक्षिप्त करून प्रमुख १० नियम तयार केले.

या उद्देशात सहावा नियम आहे –**'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'** मानवाची चौफेर प्रगती व्हावी, यासाठी शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य उत्तम असणे अनिवार्य आहे. त्यासोबत स्वतःचे भान म्हणजे 'मी कोण? मी का जन्मलो? माझ्या जीवनाचा उद्देश काय? मला कुणी जन्माला घातले ? का घातले? सभोवताली दिसणारे प्राणी, पक्षी, किडे–मुंग्या इत्यादींचा जन्म–मृत्यू मला दिसत आहे, तो का? इत्यादी गहन प्रश्नांचे चिंतन म्हणजेच आत्मज्ञान झाले पाहिजे. या विपयीच्या चिंतनाने आत्मिक उन्नती साधता येते. ज्या घरी व ज्या देशात आपला जन्म झाला आहे, त्याची उन्नती आर्थिक व सामाजिक उन्नती साधणे हेच महत्त्वाचे आहे. तेच जीवन साफल्य प्राप्त करण्यासाठी 'आर्य समाज' स्थापन झाला.

आर्य समाजाचे पहिले पाच नियम हे मनुष्याचे वैयक्तिक जीवन समृद्ध, शुद्ध व विचाराधिष्ठित, धर्म व संस्कृतीच्या संवर्धनासाठी चालना देणारे आणि वैज्ञानिक आहेत. पहिला नियम – **'सर्व सत्य विद्या आणि जे पदार्थ विद्येने जाणले जातात. त्या सर्वांचे आदिमूळ परमेश्वर आहे.'** जे प्रत्यक्ष आहे, ते सत्य व जे तर्काने जाणले जाते, ज्या विद्येने जाणले जाते, त्या सर्वांचे मूळ परमेश्वर आहे.

आज वैज्ञानिकांनी एका अज्ञात शक्तीला मान्यता आहे. तिला नेचर म्हणा की परमेश्वर! तो तर सर्वत्र आहे. तो या सर्व जगाचा नियंता आहे, हे मान्य केलेले आहे. दुसऱ्या नियमात परमेश्वराच्या विविध गुणांचे वर्णन आहे. यथा– **'ईश्वर सच्चिदानंदस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालू, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादी, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी**

योग्य है।' या नियमात परमेश्वराच्या विस गुणांचे वर्णन करण्यात आले आहे. आज बहुसंख्य हिन्दू समाज जडपूजेत रममाण झालेला आहे. इतर समाज एका व्यक्तीने (प्रेपित) स्थापन केलेल्या पंथांमध्ये अडकलेला आहे. वैदिक (हिंदू) धर्माचा आधार वेद आहेत. ओ३म् या शब्दाचा वापर सर्व मत-पंथात या ना त्या मंत्रस्वरुपात पाहावयास मिळतो, वास्तविक 'अ'- उत्पत्ती, 'ऊ'-स्थिती 'म' लय! जन्म व मृत्युच्या शाश्वत सत्याचे व सृष्टिकर्त्याचे निज नाव 'ओ३म्' आहे. याचा विचारच आपण करत नाही. आज आपण बाजारातील एखादी यांत्रिक वस्तू घेऊन आलो की, त्यासोबत त्याचा उपयोग कसा करावा? या विपयी माहिती देणारी पुस्तिका 'केटलॉग' कंपनी वस्तुसोबत देते. मग परमेश्वराने सृष्टी उत्पन्न केल्यानंतर 'केटलॉग' दिला नसेल का? परमेश्वराने माणसाच्या निर्मिती सोबतच त्याला पण 'केटलॉग' दिला आहे. त्याचे नांव **'वेद'** होय! वेद या शब्दाचा अर्थच ज्ञान असा आहे. तिसरा नियम हेच सांगतो की, **'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'** वेद चार आहेत. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद आणि अथर्ववेद (ज्ञान, कर्म, उपासना व विज्ञान) असे त्यांचे विपय आहेत. त्यांच्या नियमित अध्ययनाने बीजरुपात असलेल्या ज्ञानाचा उलगडा होत जातो व जीवन समृद्ध बनते.

आर्य समाजाचा चौथा नियम सांगतो - **''सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।''** आज प्रत्येक जण आपआपल्या विचारांना घट्ट चिकटून बसला आहे. वेदज्ञान हे वैज्ञानिक दृष्ट्या परिपूर्ण व सत्यस्वरुपी असतांनाही त्यास स्वीकारण्याची तयारीच नाही. वेदांमध्ये आई, वडील, गुरु आणि अतिथी हे देव आहेत. त्यांची सेवाशुश्रूपा (पूजा) करणे याचे प्रतिपादन आहे. संत नामदेवांनीही विपद केले आहे- **'आई-बाप हे दैवत माझे, असता माझ्या घरी। कश्याला जाऊ मी पंढरपूरी।।'** हे सत्य समजते व कळते, तरी पण आपल्या हातून जडपूजा सुटत नाही. 'कळतेय पण वळत नाही' यासाठी मनाचे दरवाजे सताड उघडे ठेऊन जे जे सत्य आहे, त्यांचा मनसा-वाचा-कर्मणा स्वीकार करुन ते व्यवहारात आणण्याचा संदेश हा नियम आपणास देत आहे. आर्य समाजाचा पाचवा नियम आहे-**'सब काम**

धर्मानुसार अर्थात सत्य-असत्य को विचार करके करने चाहिए।' हा पाचवा नियम आपणास धर्माची व्याख्याच सांगत आहे. सत्य हेच धर्म आहे. आणि असत्य हे अधर्म आहे. याचा विचार करुन आपण पवित्र तेच कर्म करावे. ज्यामुळे आपली उन्नती होईल. स्वार्थ व परमार्थ दोन्ही साधण्याचा मार्ग म्हणजेच सत्याचरण होय.

सहाव्या नियमात आर्य समाजाचा उद्देश विशद केला आहे. व्यक्तीची शारीरिक, आत्मीक व सामाजिक उन्नती साधली पाहिजे. या नियमांची रचना स्वामी दयानंद सरस्वतींनी केली आहे. परिवार आणि समाजामध्ये कसे राहावे व वागावे? याचा जणू वस्तूपाठच यात दिलेला आहे. सातव्या नियमांत स्वामीजी म्हणतात - **'सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।'** सर्वांशी प्रेमाने वागतांना धर्मानुसार म्हणजे सत्य व असत्याचा विचार करुन जशास तसे वागण्याचा सल्ला या ठिकाणी देण्यात आला आहे. आपल्या समाजात वाढणाऱ्या अविद्ये विपयी स्वामीजींना चिंता वाटते. म्हणूनच ते आठव्या नियमात म्हणतात- **'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'** या आठव्या नियमात उपदेश करण्यात आला आहे. महात्मा जोतिबा फूले म्हणतात - **'विद्येविना मति गेली, मतीविना नीती गेली, नितीविना गती गेली, गतीविना वित्त गेले, वित्ताविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले.'** जीवनात विद्येची जोपासना प्रत्येकानी करावी व विद्येचा प्रसार करावा. पुढचे दोन नियम सामाजिक संघटन वृद्धिंगत करण्यासाठी व समाज एकसंघ होण्यासाठी अनिवार्य आहेत.

नववा नियम असा आहे- **'प्रत्येक को अपनीही उन्नति में संतुष्ट न रहचना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नती समझनी चाहिए।'** तर दहावा नियम याप्रमाणे - **'सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए ओर प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।'**

हे दोन्ही नियम वाचल्यानंतर वैयक्तिक स्वातंत्र्य, सामाजिक, बांधीलकी, आर्थिक उन्नती, सामाजिक समरसता व लोकशाहीचे खरे स्वरुप आपल्या समोर उभे राहते. आज वैयक्तिक व सामाजिक उन्नतीसाठी आर्य समाजाची अत्यंत आवश्यकता आहे. वैदिक विचार समाजामध्ये रुजणे

अत्यावश्यक आहे. म्हणून महर्षी दयानंद सरस्वतींनी मनुष्यांना वेदांकडे चालण्याचा आदेश दिलेला आहे. हे सर्व साध्य झाले की समग्र विश्वाचे कल्याण साधले जाते. म्हणजेच जगातला प्रत्येक मानव सर्वदृष्टीने समृद्ध होते. आर्य समाज हा केवळ एका देशापुरता अथवा एखाद्या विशिष्ट मत-पंथापुरताच मर्यादित नाही. तो सर्वांचे म्हणजेच संपूर्ण मानव समूहाचे कल्याण करु इच्छितो. कोणाविषयी भेदभावना तर अजिबात बाळगत नाही. अट फक्त हीच की सर्वांनी वेदांनुसार आचरण करीत माणुसकीने वागले पाहिजे. निःस्पृह वृत्तीने सृष्टीच्या नियमांचे पालन करीत एक दुसऱ्यांशी प्रेमपूर्ण व्यवहार करावा. असे झाले की, तो खरेच आर्य बनला. सर्व प्रकारे जगावर उपकार करण्याची आर्य समाजाची भावना आहे.

- प्रधान, आर्य समाज,
औराद शहाजानी ता.निलंगा
मो.९०६७७९४४९७

वार्ता विशेष

३, ४, ५ मे रोजी लातूरला वार्षिकोत्सव

लातूर येथील गांधी चौक आर्य समाजाचा ८६ वा वार्षिक उत्सव आगामी दि.३,४ व ५ मे २०२४ रोजी उत्साहात संपन्न होणार आहे. यासाठी गुरुकुल होशंगाबाद (म.प्र.) येथील प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य श्री योगेंद्रजी याज्ञिक हे मार्गदर्शक वक्ते म्हणून तर ग्वाल्हेर (म.प्र.) येथील पं. अशोकजी आर्य हे भजनोपदेशक म्हणून येत आहेत. दररोज सकाळी यज्ञ, भजन, प्रवचन व रात्री राष्ट्रीय व सामाजिक विषयांवर भजनसंगीत व व्याख्यान पार पडतील.

दोन्ही विद्वान वक्ते अतिशय अभ्यासू व प्रभावशाली असून वेगवेगळ्या विषयांवर ते मार्गदर्शन करणार आहेत. शेवटच्या दिवशी सकाळी पू.सोममुनिजी व विज्ञानमुनिजी यांचा संन्यास दीक्षाविधी तर दुपारी प्रांतीय आर्य कार्यकर्त्ता जागृती संकल्प मेळावा होणार आहे.

तरी या कार्यक्रमास बहुसंख्येने उपस्थित राहुन वेदज्ञानाचा लाभ घ्यावा, असे आवाहन आर्य समाज गांधी चौक, लातूरचे प्रधान श्री ओमप्रकाशजी पाराशर, मंत्री प्रा. शरदचंद्र डुमणे, कोषाध्यक्ष अविनाश परांडेकर , उपप्रधान भारत माळवदकर, उपमंत्री सौ.जयमाला धीरेंद्र पाटील यांनी केले आहे.

मूळशंकरचा 'बोध' क्रांतीचा उद्घोष ठरला!- श्रीराम आर्य

बालक मूलशंकरला वयाच्या चौदाव्या वर्षी झालेला 'बोध' हा जगातील आध्यात्मिक व धार्मिक क्षेत्रातील अज्ञानाचा काळोख नाहीसा करणारा ठरला, असे विचार पं.श्रीराम आर्य यांनी मांडले. आर्य समाज रामनगर, लातूरच्या ऋषि बोधोत्सवात ते प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते.

या बोधदिवसानिमित्त आयोजित यज्ञात सौ. प्रियांका व श्री. कुलदीप लोखंडे, सौ. अंजू व श्री. चेतन चिद्री, सौ. राधा व श्री. सुरेश गीर हे यजमान म्हणून उपस्थित होते. यावेळी कवी श्री.सुरेश गीर व श्री रामेश्वर राऊत यांनी सुंदर भजने सादर केली. या कार्यक्रमास सभामंत्री श्री राजेंद्र दिवे, आर्य समाजाचे प्रधान श्री एस. आर. मोरे, मंत्री श्री अनंत लोखंडे , उपमंत्री देवदत्त मोरे व इतर पदाधिकारी आणि कार्यकर्ते उपस्थित होते.

दयानंदांमुळे शिवरात्र 'बोधरात्र' ठरली! -पं.लक्ष्मण आर्य

प्रखर आध्यात्मिक जिज्ञासा व सत्यज्ञानाच्या बळावर महर्षी दयानंदांनी परंपरागत शिवरात्रीला बोधरात्रीत रूपांतरित केले व समग्र विश्वाला निराकार व सर्वव्यापी अशा सत्य शिवाचे दर्शन घडविले. म्हणूनच त्यांच्यामुळे महाशिवरात्र ही ऐतिहासिक 'बोधरात्र' ठरली, असे विचार वेदाभ्यासक पं.श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांनी व्यक्त केले. परळी आर्य समाजात आयोजित ऋषी बोधोत्सवात प्रमुख वक्ते म्हणून श्री आर्य गुरुजी बोलत होते. अध्यक्षस्थानी उपप्रधान डॉ.मधुसूदन काळे हे होते. यावेळी संस्थेचे अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर लोहिया, कोषाध्यक्ष देविदासराव कावरे व्यासपीठावर उपस्थित होते.

अध्यक्षीय समारोपात डॉ.मधुसूदन काळे यांनी महर्षी दयानंदांच्या ऐतिहासिक अशा आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक व मानवकल्याणकारी कार्याचा गौरव केला. याच कार्यक्रमात एस. टी. महामंडळाच्या परळी आगारातून कंट्रोलर पदावरून श्री रमेश भंडारी यांचा सपत्नीक सत्कार करण्यात आला. प्रारंभी यज्ञ झाला. त्यानंतर सौ. सोनाली तिवार व बालकांनी भक्तीगीते सादर केली. याच कार्यक्रमात जागतिक महिला दिनानिमित्त उपस्थित महिलांचा सत्कार करण्यात आला. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन सौ. मनीषा आचार्य यांनी केले, तर आभार प्रा. डॉ.अरूण चव्हाण यांनी मानले.

॥ओ३म्॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व
आर्य समाज गांधी चौक लातूरच्या वतीने
आर्य समाज-१५० व्या स्थापना वर्षानिमित्त

आर्य समाज गांधी चौक, लातूरचा वार्षिकोत्सव - दि.३, ४ व ५ मे २०२४

पू.सोममुनिजी व पू.विज्ञानमुनिजी संन्यास दीक्षा सोहळा व

* आर्य कार्यकर्त्ता-जागृती संकल्प मेळावा *

रविवार, दि.५ मे २०२४ / स्थळ - आर्य समाज, गांधी चौक, लातूर

सस्नेह निमंत्रण

मान्यवर आर्यजन, युवावर्ग व माता-भगिनी !

आपणास कळविण्यात अत्यानंद होतो की, वेदज्ञानाने संपूर्ण जगाचे सर्वांगिण कल्याण साधावे व सर्वत्र सुख-शांतता प्रस्थापित व्हावी, या पवित्र उद्देशाने थोर युगपुरुष महर्षी दयानंद सरस्वती यांनी स्थापन केलेल्या 'आर्य समाज' या विश्वकल्याणकारी संस्थेच्या १५० व्या स्थापना वर्षानिमित्त महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा आपले सर्व कार्यक्रम या शतकोत्तर सार्ध शताब्दी वर्षाला समर्पित करीत आहे. आर्य समाज गांधी चौक, लातूर चा ८६ वा वार्षिकोत्सव दि.३, ४ व ५ मे २०२४ रोजी साजरा होत आहे. यासोबतच दि.५ मे रोजी शतायुष्यप्राप्त तपस्वी साधक पू.श्री सोममुनिजी व आरोग्यसेवेला समर्पित केलेले समाजसेवी वैद्य पू.विज्ञानमुनिजी हे दोन वानप्रस्थी संन्यास ग्रहण करीत आहेत. तसेच आर्य कार्यकर्त्यांमध्ये जागृती यावी व आर्य युवकांना वैदिक धर्माच्या प्रचार कार्यासाठी प्रेरित करण्याच्या उद्देशाने 'राज्यस्तरीय आर्य कार्यकर्ता जागृती मेळावा' संपन्न होत आहे.

- संन्यास दीक्षा -
पू.सोममुनिजी
पू.विज्ञानमुनिजी

- दीक्षाप्रदाता -
पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी
(१०७ वर्षीय तपस्वी सन्यासी)

- मार्गदर्शक विद्वान -
आचार्य पं.योगेंद्रजी याज्ञिक (होशंगाबाद)
पं.प्रियदत्तजी शास्त्री (हैदराबाद)
पं.राजवीरजी शास्त्री (सोलापुर), *पं.अशोकजी शास्त्री* (ग्वाल्हेर)

*** कार्यक्रम ***

- सकाळी ७.३० वा. : विशेष यज्ञ व संन्यास दीक्षा विधी
- सकाळी ९.३० वा. : भजनोपदेश व नूतन सन्यासी वृंदांचा सत्कार व मनोगत
- सकाळी १०.३० वा. : विद्वानांचे मार्गदर्शन
- दुपारी १२.०० : भोजन
- दुपारी १.३० वा. : **'आर्य कार्यकर्ता जागृती संकल्प मेळावा'**
  - * अध्यक्ष-श्री योगमुनिजी (प्रधान, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा)
  - * आर्य कार्यकर्त्यांचे प्रातिनिधीक मनोगत
  - * मार्गदर्शक - आचार्य पं.योगेंद्रजी याज्ञिक, पं.प्रियदत्तजी शास्त्री, पं.राजवीरजी शास्त्री

तरी या सर्व कार्यक्रमांना राज्यातील आर्य कार्यकर्त्यांनी व आर्य युवकांनी मोठ्या संख्येने सहभागी होऊन आर्य समाजाच्या कार्याला गतिमान करण्यासाठी संकल्पबद्ध व्हावे, ही विनंती.

-: विनीत :-

योगमुनि (प्रधान), राजेन्द्र दिवे(मंत्री), उग्रसेन राठौर (कोषाध्यक्ष)	ओमप्रकाश पाराशर(प्रधान), प्रा.शरदचन्द्र डुमणे (मंत्री)
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा	आर्य समाज, गांधी चौक, लातूर

।।ओ३म्।।

श्रेष्ठ मानव बनों ! अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु!! मानवता में वृद्धि करो!!!

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने

म.दयानन्द द्विजन्मशताब्दी व आर्य समाज-१५० वे स्थापना वर्ष निमिताने

मुला-मुलींना सुसंस्कारित करण्याच्या उद्देशाने चार ठिकाणी

-*मानवता संस्कार व आर्यवीर दल शिबिर*-

-* कन्या आर्य संस्कार शिबिर *-

सुजाण पालकहो, जागे व्हा! आपल्या मुला-मुलींना संस्कारित करा!

आपली मुले हीच खरी संपत्ती आहेत. ती नैतिक मूल्यांनी सुसंस्कारित होवून आदर्श बनली, तरच आपले मातृत्व व पितृत्व सफल ठरणार आहे. अमाप पैसा खर्च करुन आम्ही त्यांचे संगोपन करतो. अत्याधुनिक सुखसोयींनी युक्त अशा शिक्षण संस्थांमध्ये त्यांना प्रवेश देतो. प्रसिद्ध शाळा-महाविद्यालयात पाठ्यक्रमिक विषय देवून त्यांना फक्त मार्कवंत बनविण्यावर आपला भर असतो. पण ते शरीर व मनाने सदृढ आहेत काय? आत्मिक दृष्ट्या ते कितपत सबल आहेत ? एक आदर्श 'मानव' बनण्यास ते पात्र आहेत काय? या प्रश्नांकडे आपले पूर्णपणे दुर्लक्ष होत आहे. अशा परिस्थितीत आपल्या प्रिय मुलां-मुलींचा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक व आत्मिक विकास साधावा आणि ते आपल्या कुटुंबाचे कुलदीपक बनून राष्ट्राचे आदर्श नागरिक व श्रेष्ठ मानव बनावेत, या उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेने स्थानिक आर्य समाज व इतर शैक्षणिक, सामाजिक संस्थांच्या सहकार्याने खालील २ ठिकाणी मुलांसाठी व २ ठिकाणी मुलींसाठी संस्कार शिबिरांचे आयोजन केले आहे.

- शिबिरांचा कार्यक्रम -

१) दि.२१ एप्रिल ते २७ एप्रिल २०२४ (मुलांचे निवासी शिबिर)	-	आश्रमशाळा, वांगजेवाडी, बुधोडा ता.औसा जि.लातूर (आयोजक/संपर्क - श्री शरद झरे, मो.नं. ८८०५६२१३३७)
२) दि.२८ एप्रिल ते ११ मे २०२४ (मुलांचे अनिवासी शिबिर)	-	सिद्धेश्वर मंदिर परिसर, लातूर (आयोजक/ संपर्क-सूरज व्यवहारे,-८१४९५४१२५१,संभाजी कांबळे)
३) दि.८ मे ते १४ मे २०२४ (मुलींचे निवासी शिबिर)	-	शारदा सदन आश्रमशाळा, नांदगांव(रेल्वे परिसर), लातूर (आयोजक/संपर्क-संजय कांबळे ९०४९४०६३३३व आर्य समाज भक्तिनगर)
४) दि.१२ मे ते १९ मे २०२४ (मुलींचे निवासी शिबिर)	-	छ.शाहु महाराज सैनिकी विद्यालय, उदगीर (संपर्क - प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी ७८८८१९५८६२, आयोजक-- आर्य समाज, उदगीर)

- व्यायाम प्रशिक्षक -

आचार्य हरिसिंहजी (प्रधान प्रशिक्षक, दिल्ली)

श्री नीतेश आर्य (युवा प्रशिक्षक, हस्तिनापुर)

श्री व्यंकटेशजी हालिंगे (अधिष्ठाता, महाराष्ट्र आर्यवीर दल)

कृष्णा कारले, काशीनाथ आर्य,

अमर आर्य (गुरुकुल, परळी)

कन्या प्रशिक्षिका-कु.सृष्टी आर्या (उ.प्र.)

- बौद्धिक मार्गदर्शक -

पं.चंद्रकांत वेदालंकार, प्रा.चंद्रेश्वर शास्त्री,

पं.प्रकाशवीरजी आर्य, डॉ.वीरेंद्रजी शास्त्री, डॉ.नरेंद्रजी शिंदे,

डॉ.नयनकुमार आचार्य,पं.राजवीरजी शास्त्री,

सौ.मधुमती शिंदे,सौ.लीलावती जगदाळे,

सौ.सुननताई चौहान, वैद्य श्री विज्ञानमुनिजी,

पं.प्रतापसिंहजी चौहान, पं.सोगाजी धुप्पर इ.

* विशेष संपर्क :- व्यंकटेश हालिंगे(९८९०१०३००४), प्रा.डॉ.नरेंद्रजी शिंदे-उदगीर (८३२९४१२६२०), राजेंद्र दिवे(९८२२३६५२७२)

प्रवेश - इयत्ता ५ वी पासुन पुढील वर्गात शिकणाऱ्या मुलां-मुलींना शिबिरांच्या नियम व अटींनुसार प्रवेश मिळेल. तरी सर्व पालकांनी या शिबिरांमध्ये आपल्या मुला-मुलींना पाठवून त्यांचा सर्वांगिण विकास साधावा.

-: विनीत :-

योगमुनि (प्रधान) , **राजेन्द्र दिवे**(मंत्री), **व्यंकटेश हालिंगे** (अधिष्ठाता, महाराष्ट्र आर्यवीर दल), **प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी**(प्रमुख, मानवता संस्कार शिबिर) **सौ.लीलावती जगदाळे** (प्रमुख कन्या संस्कार शिबिर), **महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा**

परली गुरुकुल में पधारे वेदप्रचारक आचार्य आर्यनरेशजी के साथ पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता।

ऋषि बोधोत्सव समारोह, परली में मार्गदर्शन करते हुए श्री लक्ष्मण आर्य गुरुजी।

आर्य समाज पिम्परी पुणे द्वारा आयोजित आर्यवीर दल शिविर की भव्यता।

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।